रजिस्ट्री सं. डी. एल.-33001/99

REGISTERED NO. DL-33001/99

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 14] नई दिल्ली, शनिवार, अप्रैल 3, 1999 (चैत्र 13, 1921)

No. 14] NEW DELHI, SATURDAY, APRIL 3, 1999 (CHAITRA 13, 1921)

(इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके)

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खण्ड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालयों द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं .	341
भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं . . .	235
भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के संबंध में अधिसूचनाएं	5
भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं .	387
भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम .	*
भाग II—खण्ड 1क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ . .	*
भाग II—खण्ड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट . .	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिसमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं)	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)	*
भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश . . .	*
भाग III—खण्ड 1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखा-परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	331
भाग III—खण्ड 2—पेटेन्ट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से संबंधित अधिसूचनाएं और नोटिस . . .	349
भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं .	—
भाग III—खण्ड 4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं।	1079
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस . . .	417
भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला सम्पूरक	

*आंकड़े प्राप्त नहीं हुए

CONTENTS

PAGE

PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court 341

PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court 235

PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence 5

PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence 387

PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations . . . . . *

PART II—SECTION 1-A—Authoritative tests in Hindi Languages of Acts, Ordinances and Regulations . . . . . *

PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills . . . . . *

PART II—SECTION 2—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) *

PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) *

PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 of Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories) . *

PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence . *

PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India . 331

PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs 349

PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners . . . . . —

PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies 1079

PART IV—Advertisements and Notices issued by private Individuals and private Bodies . 417

PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc., both in English and Hindi *

*Forms not received

भाग I—खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सांविधिक नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति का सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी, 1999

सं० 49-प्रेज/99—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को अनुकरणीय वीरतापूर्ण कार्यों के लिए कीर्ति चक्र प्रदान किए जाने का अनुमोदन करते हैं :—

1. 3988401 सिपाही संजीव सिंह, 18 डोगरा (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख: 7 फरवरी, 1998)

जम्मू एवं कश्मीर में गांव चामरेर (सूरनकोट सैक्टर) के क्षेत्र में सिपाही संजीव सिंह ने 7 फरवरी से 9 फरवरी, 1998 की एक संक्रिया में भाग लिया । सिपाही संजीव सिंह संक्रिया के दौरान दस्ते का स्काउट था ।

जब वे घने जंगल के पास पहुंचे तो आतंकवादियों ने गोलीबारी करके उन्हें गंभीर रूप से घायल कर दिया । अत्यधिक खून बहने और स्वचालित हथियारों की प्रचंड गोलाबारी के बावजूद सिपाही संजीव सिंह रेंगते हुए एक ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां से वह अपनी प्लाटून की तैनाती में सहायता के लिए प्रभावकारी गोलाबारी कर सकते थे ।

अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए वह तेजी से आगे बढ़े और उस आतंकवादी पर टूट पड़े जो लगातार उनकी प्लाटून पर गोलीबारी कर रहा था और आमने-सामने की भिड़न्त में आतंकवादी को मार गिराया ।

सिपाही संजीव सिंह ने आतंकवादी गोलाबारूद का सामना करते हुए अदम्य साहस और सूझबूझ का परिचय दिया । वह गंभीर रूप से घायल होने के बाद भी आतंकवादियों से लगातार भिड़े रहे और इस प्रकार अपनी प्लाटून में सैनिकों को हताहत होने से बचाया । कार्रवाई स्थल से हटाए जाते समय 27 फरवरी, 1998 को उनकी मृत्यु हो गई । चूंकि उनकी रीढ़ की हड्डी में फंसी एक गोली को निकाला नहीं जा सका था ।

सिपाही संजीव सिंह ने उत्कृष्ट वीरता, अतुलनीय वृढ़ता, कर्तव्य से बढ़कर कार्य के प्रति निष्ठा और आत्म बलिदान की भावना का परिचय दिया ।

2. 2589180 नायक जी० वरगीस के० डी०, 14 असम रेजिमेन्ट (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 26 मार्च, 1998)

26 मार्च, 1998 को प्रातः 9.40 बजे खुफिया विभाग की इस विशिष्ट सूचना के आधार पर कि असम के कोकराझाड़ जिले में पाकीहागा गांव में कार्रवाई ग्रुप के कुछ विद्रोही छिपे हुए हैं इस ठिकाने पर एक त्वरित कार्रवाई दल भेजा गया था । नायक जी० वरगीस के० डी० इस त्वरित कार्रवाई दल के एक सदस्य थे ।

छिपे हुए स्थान पर दल के सदस्यों के पहुंचने का पता लगते ही पांच आतंकवादी भागने लगे । नायक जी० वरगीस के० डी० दल के दो अन्य सदस्यों के साथ दो आतंकवादियों पर झपटे जो आड़ लेते हुए दल के सदस्यों पर गोलीबारी कर रहे थे । जब वह आतंकवादियों के नजदीक पहुंच रहे थे नायक जी वरगीस के० डी० की बाईं जांघ पर एक गोली लगी ।

घायल होने और अपनी निजी सुरक्षा की परवाह न करते हुए नायक जी० वरगीस के० डी० ने अतुलनीय वीरता और साहस का परिचय देते हुए, तीन मीटर तक रेंगते हुए एक आतंकवादी के पास पहुंच कर उसे सिर में गोली मारकर घटना स्थल पर ही मार गिराया । अचेतन होने तक वह कार्य को पूरा करने के लिए लगातार अपने दल के सदस्यों को प्रोत्साहित करते रहे ।

पूरी संक्रिया के दौरान नायक जी० वरगीस के० डी० गंभीर रूप से घायल होने के बाद भी अपने दल के सदस्यों को प्रोत्साहित करते रहे जिसके परिणामस्वरूप पांच दुर्दान्त आतंकवादी मारे गए और उनसे दस मैगजीन और 246 जिन्दा गोलियों सहित चार ए० के०-56 राइफलें बरामद की गईं । नायक जी० वरगीस के० डी० की 26 मार्च, 1998 को सुरक्षित स्थान पर ले जाते समय, चोटों के कारण मृत्यु हो गई ।

नायक जी० वरगीस के० डी० ने आतंकवादियों के विरुद्ध लड़ते हुए बहादुरी, साहस और कर्तव्य निष्ठा का परिचय दिया और सर्वोच्च बलिदान दिया ।

3. 13613888 हवलदार बद्री लाल चुनावत,
10 पैरा (विशेष बल)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 16 अक्तूबर, 1998)

हवलदार बद्री लाल चुनावत जम्मू और कश्मीर में कुपवाडा जिले के नागरादनार गांव में बहुप्रयोजन घात टुकड़ी के दस्ते को नेतृत्व प्रदान कर रहे थे ।

16 अक्तूबर, 1998 को 7 बजे सायं यह घात टुकड़ियां तैनाती के बाद अपने पूर्व निश्चित स्थल की तरफ जा रहे थे । 7.30 बजे हवलदार बद्री लाल चुनावत ने देखा कि अंधेरे में चार आदमी उनकी तरफ बढ़ रहे हैं । उन्होंने उन्हें अपने कमांडर के दल का सदस्य समझकर उन्हें आगे आने दिया परन्तु वे व्यक्ति वास्तव में आतंकवादी थे । अंधेरी रात होने के कारण आतंकवादियों ने भी भ्रमवश रुके हुए दल को आतंकवादी समझा और उनकी ओर बढ़े । पहले आतंकवादी ने "असलाम वालेकुम" कहते हुए हवलदार बद्रीलाल चुनावत का अभिवादन करते हुए हाथ मिलाना चाहा ।

गलती महसूस करते हुए, उस क्षण उन्होंने आतंकवादी को धक्का देकर उस पर गोली चला दी । आगे वाले आतंकवादियों ने जवाबी गोलीबारी करके उनकी बाईं बाजू में गंभीर घाव कर दिया । गोली के घाव से लगातार खून बहने के बावजूद उन्होंने दाईं बाजू का प्रयोग करते हुए स्वचालित हथियार से गोलीबारी की और दो भागते हुए आतंकवादियों को घायल कर दिया । उसके बाद वह रेंगते हुए निडरता से आगे बढ़े और हथगोले फेंककर उनको गंभीर रूप से घायल कर दिया जिससे अंततः उनकी मृत्यु हो गई । अधिक खून बहने और थकान के कारण वह बेहोश होकर गिर पड़े ।

हवलदार बद्रीलाल चुनावत ने असाधारण साहस, सहयोगी भावना और कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा का परिचय दिया ।

अरुण मित्रा
राष्ट्रपति का उप सचिव

सं० 50-प्रेज/99—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को दुश्मन का सामना करते हुए वीरता दिखाने के लिए वीर चक्र प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं ।

कैप्टन सुमन दासगुप्ता (आई०सी०-54084)
15 असम रेजिमेंट (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 6 जून, 1998)

कैप्टन सुमन दासगुप्ता 10 मई, 1998 से सियाचीन ग्लेसियर में एक चौकी के प्रभारी थे ।

6 जून, 1998 को 7.30 बजे सायं वह एक अन्य सैनिक के साथ सतरी बंकर में थे । उन्होंने अपनी चौकी से 1500 मीटर की दूरी पर कुछ हलचल महसूस की । दुश्मन सैनिक संदेहजनक ढंग से वास्तविक भू रेखा स्थिति की तरफ बढ़ रहे थे । उन्होंने मीडियम मशीनगन से गोलीबारी करते हुए दो दुश्मनों को भूमि पर मार गिराया । जवाब में दुश्मन ने 80 मि० मी० मोर्टार से गोलीबारी शुरु कर दी और लगभग 150 चक्र गोलियां चलाईं ।

भारी गोलीबारी के बावजूद अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए वह दुश्मन की किसी भी हरकत को रोकने के लिए वह दुश्मन की चौकी पर गोलीबारी करते रहे । इस प्रक्रिया में उन्हें सतरी बंकर के छेद से मोर्टार छर्रा लगा और वह घायल होकर घटना स्थल पर ही वीरगति को प्राप्त हो गए ।

कैप्टन सुमन दासगुप्ता ने दुश्मन की निरंतर गोलीबारी के सामने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए साहस तथा निःस्वार्थ सेवा का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है ।

अरुण मित्रा
राष्ट्रपति का उप सचिव

सं० 51-प्रेज/99—राष्ट्रपति, महोदय निम्न व्यक्तियों को वीरतापूर्ण कार्य के लिए शौर्य चक्र प्रदान करने की अनुमति प्रदान करते है :—

1. श्री बोरज डे, कलकत्ता, प० बंगाल
(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 15 मई, 1997)

दिनांक 15-5-1997 को लगभग 6.00 बजे सायं तीन बदमाश डकैती के इरादे से 71, गणेश च० एवेन्यू पर "मोनिका ट्रेवल्स" नामक ट्रैवलिंग एजेन्सी के कार्यालय में घुस गए । प्रतिरोध होने पर उन्होंने भागने की कोशिश की परन्तु "चोर-चोर" 'पकड़ो-पकड़ो' की आवाज सुनने पर श्री बोरज डे ने इन बदमाशों का साइकिल पर पीछा किया और आखिर एक बदमाश को उन्होंने गोकुल स्ट्रीट पर पकड़ ही लिया । इसी बीच बदमाश के दूसरे साथी ने बंदूक से बोरज डे पर गोली चला दी जिसने उनकी पीठ से घुसकर दिल को बुरी तरह क्षतिग्रस्त कर दिया । वे तुरन्त गिर पड़े और उनके भाई तथा दूसरे चश्मदीद गवाह द्वारा उन्हें तुरन्त अस्पताल पहुंचाया गया । उनका आपरेशन किया गया परन्तु 10.30 बजे रात्रि में उनकी मृत्यु हो गई । इस घटना के बाद बदमाश अलग-अलग दिशाओं में भाग गए परन्तु इनमें से

एक को लोगों ने पकड़ लिया और उसे बाद में पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया ।

इस प्रकार श्री बीरज डे ने अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान देकर डकैती के प्रयास को असफल कर दिया ।

2. 4064683 लांस नायक राम सिंह,
18 गढ़वाल राईफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 25 जून, 1997)

लांस नायक राम सिंह को दिनांक 25 जून, 1997 को उत्तरी सैक्टर में नियंत्रण रेखा पर स्थित पांथी स्पर में एम्बुश दल में भेजा गया था । इस एम्बुश दल का सामना सीमा पर करने की कोशिश कर रहे अत्यंत भारी हथियारों से लैस उग्रवादियों से हो गया । गोलीबारी के आदान-प्रदान के दौरान कुछ उग्रवादी बचने के लिए नियंत्रण रेखा पर पांथी स्पर की ओर भाग गए ।

घमासान गोलीबारी का शोर सुनकर लांस नायक राम सिंह उग्रवादियों की ओर दौड़े और नजदीक से उन पर कारगर गोलीबारी करके उनका भाग निकलने का रास्ता बंद कर दिया यदि लांस नायक राम सिंह ने तुरन्त कार्रवाई न की होती तो उग्रवादी आराम से गहरी झाड़ियों का सहारा लेकर नियंत्रण रेखा पार करके बच निकलते । उग्रवादियों ने लांस नायक राम सिंह पर भारी जवाबी गोलीबारी शुरु कर दी और लांस नायक राम सिंह को सिर उठाने का अवसर न देकर भागने का प्रयास किया । दुर्भाग्य से जैसे ही लांस नायक राम सिंह उग्रवादियों के करीब पहुंचे उनकी गोलियां खत्म हो गई ।

उन्होंने अपनी खुखरी निकाली और एक उग्रवादी पर टूट पड़े । इस तीव्र आक्रमण से उग्रवादी हतप्रभ रह गया । लांस नायक राम सिंह की खुखरी ने उग्रवादी का पेट फाड़ डाला और उसकी तुरन्त मृत्यु हो गई । लांस नायक राम सिंह द्वारा दिखाया गया यह बिरला और दुस्साहसिक कार्य भारतीय सेना के इतिहास में असाधारण है जिससे इस अभियान की बड़ी सफलता में बहुत सहयोग मिला, जिसमें छह भाड़े के उग्रवादी मारे गए और भारी मात्रा में शस्त्र, गोलीबारुद तथा औजार बरामद हुए ।

लांस नायक रामसिंह ने इस प्रकार अपने कर्त्तव्यों से कहीं बढ़कर शौर्य का प्रदर्शन किया ।

3. 14367197 सिपाही सुखबीर सिंह, जनरल ड्यूटी
(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख, 18 अगस्त, 1997)

श्री सुखबीर सिंह 5 अप्रैल, 1997 से वायु सेना की सी० ए० सी० (यू) मुख्यालय में संबद्ध 914 रक्षा सुरक्षा कोर-प्लाटून की तैनाती नफरी पर थे ।

सिपाही सुखबीर सिंह अब अपने मूल गांव खण्डासा, गुड़गाव (हरियाणा) में वार्षिक छुट्टी पर थे तो उन्होंने देखा कि जयपुर गोल्डन ट्रांसपोर्ट कम्पनी के गोदाम की दीवार को तोड़कर कुछ चोर सामान चोरी कर रहे थे । उसने अपने चार भाइयों और एक पड़ौसी को जगाया और लाठियां लेकर वे सभी चोरी के स्थल पर पहुंच गए । ज्योंहि चोरों ने मारुती वेन में भाग निकलने की कोशिश की कम्पनी के गोदाम को चारों ओर से घेर लिया । अपराधी ने चाकू और रिवाल्वर तान ली और उन्होंने सिपाही सुखबीर सिंह और साथियों को दखलंदाजी न करने की चेतावनी दी । सुखबीर सिंह डरे नहीं और वैन के ड्राईवर को पकड़ लिया । हाथापाई के दौरान पीछे बैठे हुए दूसरे आदमी ने उन पर गोली चलाई इस सिपाही को छाती में गोली लगी और वे गंभीर रुप से घायल होकर जमीन पर गिर गए । अस्पताल को जाते हुए उन्होंने घाव के कारण दम तोड़ दिया । सिपाही सुखबीर सिंह ने अपनी सुरक्षा की जरा-सी भी परवाह न करते हुए अपराधियों से टक्कर लेते हुए वीरता का परिचय दिया और जिस सम्पति का उनसे कोई सम्बन्ध नहीं था उसको बचाने के लिए जीवन का बलिदान कर दिया ।

4. श्री निहाल चन्द बिशनोई, (मरणोपरांत)
बिकानेर,
राजस्थान ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 3 अक्तूबर, 1997)

दिनांक 3-10-1997 को कुछ शिकारी आधुनिक हथियारों सहित बिकानेर जिले के बाडनू गांव में पहुंचे और हिरनों का शिकार करना शुरू कर दिया । उन्होंने गोलियों से छः हिरनों को मार दिया । बन्दूक चलने की आवाज सुनकर श्री निहाल चन्द बिशनोई ने गांव वालों को इकट्ठा किया और शिकारियों को रोकने की कोशिश की । शिकारियों ने गांव वालों पर गोली चला दी । परन्तु श्री बिशनोई रूके नहीं और शिकारियों का पीछा करते रहे जिसमें उन्हें मारे हुए हिरनों को मौके पर ही छोड़ कर भागना पड़ा । उन्होंने श्री बिशनोई पर भी गोलियां चलाई जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए । थोड़ी देर बाद श्री बिशनोई ने घावों के कारण दम तोड़ दिया ।

इस प्रकार श्री निहाल चन्द बिशनोई ने वन्य जीवों को शिकारियों से बचाने की बिशनोई परम्परा को बनाए रखते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया ।

5. (2688630) लांस नायक जयबीर सिंह,
15 ग्रेनेडियर्स ।

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 6 जनवरी, 1998)

6 जनवरी, 1998 को लांस नायक जयबीर सिंह, गांव गान्टा, तहसील-पाओनी, जम्मू कश्मीर के जंगल में

उग्रवादियों को छुपने के स्थान से निकाल बाहर करने के काम में लगी प्लाटून के 2 नम्बर स्काऊंट थे ।

जब इस प्लाटून पर उग्रवादियों ने ऊंचे स्थान से हमला कर दिया और सभी की जान खतरे में पड़ गई तो स्थिति की गम्भीरता को भांपते हुए लांस नायक जयबीर सिंह ने स्काऊट नं० 1 को गोली चलाने की स्थिति में जाने के लिए प्रेरित किया जिसके बुलेट-प्रूफ पटके पर बाद में गोलियां लगीं । भयानक गोली बारी में अकेले, फंसे हुए लांस नायक जयबीर सिंह व्यक्तिगत सुरक्षा के प्रति पूर्णतया बेपरवाह आगे बढ़े और उग्रवादियों से उलझ पड़े परिणामस्वरूप उग्रवादियों को वह जगह छोड़नी पड़ी । अवसर का लाभ उठाते हुए लांस नायक जयबीर सिंह ने एक उग्रवादी को गोली मार कर खत्म कर दिया । जवाबी गोलीबारी में उसके कमर और टांगों पर गोलियां लगी और 6 जनवरी, 1998 को घावों के कारण वे वीरगति को प्राप्त हो गए । लांस नायक जयबीर सिंह ने विपरीत परिस्थितियों में सैनिकोचित आचरण, निस्वार्थ बलिदान तथा अदम्य व्यक्तिगत साहस का उदाहरण प्रस्तुत किया ।

6. मेजर इन्दरजीत सिंह (आई०सी०–48640)
34 राष्ट्रीय राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 3 फरवरी, 1998)

मेजर इन्दरजीत सिंह अपनी कंपनी के साथ 03 फरवरी 1998 की आधी रात में जम्मू कश्मीर में बड़गाम जिले के चक दीवान लक्ष्मनदास गांव की घेराबन्दी के लिए पहुंचे ।

उन्हें तलाशी के दौरान आतंकवादियों के एक भूमिगत बंकर का पता चला । बंकर की तलाशी कर रहे इस खोजी दल पर आतंकवादियों ने अंधाधुन्ध गोलीबारी आरंभ कर दी। उनकी गोलीबारी से भयभीत हुए बिना आपने वहां स्थित सभी मकानों पर तुरन्त घेरा डाल दिया ताकि कोई भी आतंकवादी भाग न सके। दोपहर में 1.30 बजे एक आतंकवादी ने गोलियों की भीषण बौछार करते हुए भागने किया । आपने अपनी जान जोखिम में डालते हुए तत्काल उसे धर दबोचा और बिल्कुल नजदीक से गोली दागकर उसे वहीं मार गिराया ।

शाम को 6 बजे एक अन्य मकान में एक अन्य आतंकवादी पर जवानों की नजर पड़ी तो उसने इस खोजी दल पर अत्याधुनिक ग्रेनेड लांचर और स्वचालित राइफल से गोलीबारी आरंभ कर दी । आपने उस आतंकवादी को वहां से निकल भागने की कोशिश और रात के गहराते अंधकार को भांपते हुए कर्तव्य से बढ़कर साहस का परिचय दिया और बिना गोलीबारी की चिंता करते हुए अकेले उस मकान के निकट जा पहुंचे । मकान के भीतर छिपे आतंकवादी की स्थिति का सही अंदाजा लगाते हुए आपने दरवाजे पर एक ठोकर जमाई जिससे दरवाजा खुल गया और अगले ही क्षण आपने स्वयं को जोखिम में डालते हुए सीधा उस आतंकवादी का एक ही गोली में काम तमाम कर डाला ।

इस प्रकार मेजर इन्दर जीत सिंह ने बड़ी बहादुरी से अपनी कंपनी का नेतृत्व करते हुए उपर्युक्त कार्रवाई को तर्कसंगत व सफल परिणति तक पहुंचाया ।

7. मेजर सैयद अली उस्मान (आई०सी०–46931)
8 असम रेजिमेन्ट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 20 फरवरी, 1998)

असम में गोहपुर के उत्तर में बोडो बहुल क्षेत्र के कुवाड़ीगुड़ी गांव में कुछ मकानों में आतंकवादियों के छिपे होने की सूचना के आधार पर मेजर सैयद अली उस्मान 20 फरवरी 1998 को सर्वाधिक दुर्गम रास्ते से होते हुए वहां पहुंचने की योजना बनाई ताकि वे चुपचाप छिपते छिपाते सुरक्षित वहां तक पहुंच जाएं और आतंकवादियों को इस बात की भनक भी न लगे ।

जैसे ही उनका दल संदिग्ध मकान की ओर बढ़ा, मेजर सैयद अली उस्मान ने अपने दल को आदेश दिया कि वे भागकर सभी मकानों को घेर लें। जब घेराबन्दी की जा रही थी तभी आतंकवादियों ने इस दल पर गोलीबारी आरंभ कर दी और वहां से निकल भागने का प्रयास किया । आतंकवादियों को भागता देखकर आपने ए०के०–47 राइफल से हिप पोजीशन से निशाना लगाते हुए उनमें से एक को वहां मार गिराया । उसके बाद की कार्रवाइयों में एक अन्य खुर्दान्त आतंकवादी का काम तमाम कर दिया गया और हथियार व गोलीबारूद बरामद किए गए ।

मेजर सैयद अली उस्मान ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा का परवाह न करते हुए अतुलनीय वीरता अनुकरणीय साहस और उत्कृष्ट नेतृत्व का परिचय दिया ।

9. 4177952 नायक उर्वा दत्त, 3 कुमाऊं
(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 24 फरवरी, 1998)

23 फरवरी, 1998 को पक्की सूचना मिली थी कि जिन आतंकवादियों को अति विशिष्ट व्यक्तियों के मोटर काफिले के मार्ग पर विस्फोटक सामग्री रखने का काम सौंपा गया है वे जम्मू-कश्मीर में श्रीनगर जिले के सलूरा नामक गांव में छिपे हुए हैं ।

रात के लगभग 9 बजे सलूरा सोफी मोहल्ले के चारों ओर घेरा डाल दिया गया । इस कड़ी घेराबन्दी के कारण वहां से निकल पाना संभव नहीं था । इसलिए राष्ट्र विरोधी तत्व अपनी योजनानुसार मार्ग में विस्फोटक सामग्री नहीं बिछा सके । अगली सुबह लगभग 11 बजे

मोहल्ले के अंतिम घर की तलाशी लेते हुए नायक ऊर्बा दत्त को छत के ऊपर रखे सूखी घास के ढेर में कुछ हलचल दिखाई दी। उन्होंने उस ढेर पर गोली चला दी किंतु राष्ट्रविरोधी तत्व नाले में कूदकर मंबल के जंगल की ओर निकल भागे।

नायक ऊर्बा दत्त ने तुरन्त आगे बढ़कर कमर तक गहरे पानी वाले नाले में छलांग लगा दी और भाग रहे राष्ट्र विरोधी तत्वों का बड़ी निर्भीकता से पीछा जब किया जो कि अंधाधुन्ध गोलियां बरसा रहे थे। जब नायक ऊर्बा दत्त आतंकवादियों से लगभग दस मीटर दूर थे तो आतंकवादियों ने पेड़ों के पीछे छिपकर उन पर गोलियां चला दीं। उनके जख्मों से अत्याधिक खून बहने के बावजूद अपनी जान को खतरे में डालकर उन्होंने आतंकवादियों पर धावा बोल दिया और उनमें से एक को मार गिराया तथा दूसरे को गंभीर रूप से घायल कर दिया जिसकी बाद में मृत्यु हो गई। किंतु वह पराक्रमी सैनिक भी अपने जख्मों के कारण 24 फरवरी, 1998 को वीरगति को प्राप्त हुआ।

नायक ऊर्बा दत्त ने अदम्य साहस और वीरता का परिचय दिया और भारतीय सेना की उच्चतम परंपराओं का निर्वाह करते हुए अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान किया।

9. 8026254 नायक राम सिंह, पायनियर कोर
(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 04 मार्च, 1998)

नायक राम सिंह अस्थायी ड्यूटी पूरी कर 04 मार्च, 1998 को ब्रह्मपुत्र मेल से लौट रहे थे। जब गाड़ी मालदा रेलवे स्टेशन पर पहुंची तो कुछ बदमाश लोग गाड़ी चढ़ गए और बंदूक की नोक पर यात्रियों को लूटना आरंभ कर दिया।

एक सच्चे सिपाही होने के नाते नायक राम सिंह यह सहन नहीं कर सके और अपने सहयात्रियों को बचाने के लिए उन्होंने उन 5/6 लुटेरों को ललकारा। वे अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए बड़ी बहादुरी से उन लुटेरों में उलझ पड़े।

लुटेरों के मुकाबले अकेले होने के बावजूद उन्होंने उनका सामना किया जबकि उनके सभी सहयात्री चुपचाप खड़े तमाशा देखते रहे और कोई भी उनकी मदद को आगे नहीं बढ़ा। लुटेरों ने उनपर दो बार गोली चलाई किंतु गंभीर रूप से जख्मी होने के बावजूद वे उनसे लड़ते रहे। उन्हें निर्भीकता से लुटेरों से लड़ता देखकर टिकट निरीक्षक ने भी हिम्मत जुटाई और डकैतों से लड़ने का प्रयास किया। वे दोनों मिलकर इकलाखी रेलवे स्टेशन पर लुटेरों को भागने में सफल हो गए। नायक राम सिंह को अस्पताल ले जाया गया जहां अपने जख्मों के कारण 16 मार्च, 1998 को वे वीरगति को प्राप्त हुए।

नायक राम सिंह ने दुर्दमनीय साहस का परिचय दिया और अपने सहयात्रियों की जान बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

10. मेजर संतोष प्रभाकर (आई०सी०-48157)
14 मराठा लाईट इन्फैंटरी
(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 20 मार्च, 1998)

मेजर संतोष प्रभाकर को 20 मार्च, 1998 को पश्चिम त्रिपुरा के राथाबाड़ी गांव में कुछ विद्रोहियों के ठहरे होने की संभावना के बारे में सूचना मिली। मेजर प्रभाकर उन विद्रोहियों को पकड़ने के लिए एक दल के साथ चल पड़े।

रात के लगभग 9 बजकर 10 मिनट पर जैसे ही यह दल राथाबाड़ी गांव के निकट पहुंचा, विद्रोहियों ने उन पर तेज रोशनी फेंकी और साथ ही इस दल पर ए०के०-56 राइफलों तथा लाईट मशीन गनों से भारी गोलीबारी शुरू कर दी।

मेजर संतोष प्रभाकर ने अपने दो जवानों को तेज रोशनी के घेरे से दूर धकेल दिया। इसी प्रयास में गोलियों की बौछार उनके कंधे पर पड़ी और वे पीछे की ओर लुढ़क गए। गंभीर रूप से घायल होने और अत्याधिक खून बह जाने के बावजूद उन्होंने शीघ्र ही अपनी हिम्मत बटोरी और विद्रोहियों पर गोलीबारी आरंभ कर दी। किन्तु तभी उन्हें लगा कि उनकी गोलीबारी कारगर नहीं हो रही है क्योंकि विद्रोही एक टीले के पीछे से गोलीबारी कर रहे थे।

खतरे को भांप कर और अपने दल की सुरक्षा के लिए मेजर संतोष प्रभाकर अपने जख्मों की परवाह न करते हुए गोलीबारी कर रहे विद्रोहियों पर टूट पड़े। लगभग 20 मीटर की इस दौड़ के दौरान उनके सीने और पेट में कई गोलियां आ लगीं किंतु वे गोलीबारी करते रहे और अत्यंत निकट जाकर एक विद्रोही को मार गिराया। इस कार्रवाई में उनका शरीर बुरी तरह से छलनी हो चुका था। अब वे दूसरे विद्रोही की तरफ मुड़े किंतु वहीं पर गिर पड़े और मृत विद्रोही से लगभग तीन मीटर आगे पड़े हुए पाए गए।

इस प्रकार मेजर संतोष प्रभाकर ने अत्याधिक वीरता और निःस्वार्थ भावना का परिचय दिया और अपने सभी जवानों की प्राण रक्षा करते हुए सर्वोच्च बलिदान किया।

11. मेजर सुगाता सेन (आई०सी०-51711)
14 असम रेजीमेन्ट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 26 मार्च, 1998

26 मार्च को सुबह 9 बजकर 40 मिनट पर एक पक्की सूचना मिली कि आतंकवादियों के कार्रवाई दल के कुछ

सदस्य असम में कोकराझार जिले के पाकिहागांव गांव में छिपे हुए है। इस सूचना के आधार पर "सी कंपनी के कमान अधिकारी मेजर सुगातो सेन ने तुरन्त ही स्थिति को समझते हुए इस अवसर का फायदा उठाने का निर्णय लिया।

मेजर सुगातो सेन ने दिन में ही आगे बढ़ते हुए छिपे हुए आतंकवादियों के स्थान को घेर लिया। पांच आतंकवादी एक झोंपड़ी से उनके दल पर गोलियां बरसाते हुए बाहर निकले। मेजर सुगातो सेन अपने दल को दो भागों में विभाजित होने का आदेश देते हुए दो ओर से उन दो आतंकवादियों की ओर बढ़े जो स्वचालित हथियारों से उन पर गोलियां बरसा रहे थे। आप ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए गोलियां चला दी जिससे एक आतंकवादी वहीं ढेर हो गया। तत्पश्चात आप अपने साथियों को सुरक्षा में गोलियां चलाते हुए उन्हें और आगे कार्य को पूरा करने के लिए निर्देश देते रहे और प्रेरित करते रहे।

इस समस्त कार्रवाई के दौरान मेजर सुगातो सेन ने अपने दल का आगे रह कर नेतृत्व किया जिसके परिणामस्वरूप 5 दुर्दांत आतंकवादी मार गिराए गए और चार ए० के० 56 राइफलों सहित गोली बारूद बरामद हुआ।

मेजर सुगातो सेन ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए पराक्रम, सहयोगी भावना और कर्तव्य के प्रति समर्पण भाव का परिचय दिया।

12. कैप्टन गणेश सिंह भंडारी (आई०सी०-49135)
राजपूताना राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 15 अप्रैल, 1998)

कैप्टन गणेश सिंह भंडारी, जो अपनी यूनिट के तैनाती वाले क्षेत्र और विद्रोही गतिविधियों के वाकिफ थे, ने नागालैंड में 07 अप्रैल, 1998 को कई साहसिक कार्रवाइयों का नेतृत्व किया। त्वरित कार्रवाई दल के एक सदस्य के रूप में उन्होंने एक मकान पर छापा मारा और वहां से गोली बारूद और कुछ आपत्तिजनक गोपनीय दस्तावेज बरामद किए। उसी दिन विरचना की यूनिटों द्वारा विद्रोहियों को पकड़ने के लिए कई कार्रवाइयां की गई जिनमें 14 संदिग्ध विद्रोहियों को पकड़ा गया। 08 अप्रैल, 1998 को पुनः आपने स्वयं ही चार दुर्दांत विद्रोहियों को पकड़ा। इसी तरह एक के बाद एक अविराम कार्रवाइयां करते हुए उन्होंने पकड़े गए विद्रोहियों से उगलवाई गई सूचनाओं के आधार पर 10 अप्रैल 1998 को जोखिमपूर्ण रास्तों से जाकर नागालैण्ड के भीतरी क्षेत्रों से चार दुर्दांत विद्रोहियों को पकड़ लिया।

15 अप्रैल की रात को आपने मोकोकचुंग में सशस्त्र विद्रोहियों के छिपे होने का पता लगा लिया। आप तुरंत एक त्वरित कार्रवाई दल को लेकर एक संदिग्ध मकान में घुस गए। जैसे ही उस मकान में छिपे बैठे एक विद्रोही ने अपनी भरी हुई राइफल उठाने का प्रयास किया, आप उस पर झपट पड़े और उसे दबोच लिया। इस कार्रवाई में आपने चार दुर्दांत विद्रोहियों को पकड़ा।

इस प्रकार कैप्टन गणेश सिंह भंडारी ने सच्ची बहादुरी, सैन्य युद्ध कौशल और कर्तव्य से बढ़कर सैन्य भावना का परिचय दिया।

13. 2596054 सिपाही एस० अलफोंस, 2 मद्रास
(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 16 मई, 1998)

सिपाही एस० अलफोंस 15 मई, 1998 को 1.30 बजे अपराह्न आसाम के सिमलगुड़ी गांव में आतंकवादियों को पकड़ने के लिए गश्ती दल में भेजे गए थे। गांव में पहुंचने पर गश्ती दल पर भारी गोलीबारी शुरू हो गई। गश्ती दल ने जवाबी कार्रवाई में तीन आतंकवादियों को मार गिराया।

इसी बीच कुछ आतंकवादियों को भागते हुए देखा गया, सामने से आती गोलियों की बौछार के बावजूद सिपाही एस अलफोंस उनका पीछा करने में सबसे आगे रहे जैसे ही गश्ती दल नलबाड़ी गांव में पहुंचा इस दल पर, छाती तक ऊंची एलीफेंट घास वाली दलदली भूमि से, स्वचालित हथियारों और ग्रेनेडों से भारी गोलीबारी शुरू हो गई। गश्ती दल की सामरिक तैनाती की गई और इसके बाद दो घंटे तक गोलीबारी चलती रही।

इस बात का अंदाजा लगाते हुए कि आतंकवादी बढ़ते हुए अंधेरे का लाभ उठाकर भाग सकते हैं सिपाही अलफोंस पूर्व की ओर से एक आतंकवादी की ओर बढ़े। इसके जवाब में उधर से गोलीबारी तथा ग्रेनेडों की बौछार होने लगी। अपनी सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए सिपाही एस० अलफोंस ने एक आतंकवादी पर धावा बोल दिया और उसे गोली मारकर खत्म कर दिया। यह देखकर कि दूसरा आतंकवादी उनकी टुकड़ी पर ग्रेनेड फेंकने वाला है सिपाही एस० अलफोंस ने खड़े होकर इस पर धावा बोल दिया। इससे आतंकवादी का ध्यान बंट गया और उसने ग्रेनेड सिपाही एस० अलफोंस पर फेंक दिया। इससे गंभीर रूप से घायल होने पर भी सिपाही एस० अलफोंस ने आतंकवादी को गोली चलाकर घायल कर दिया। इस बहादुर सिपाही की 15 मई, 1998 को घावों के कारण मृत्यु हो गई। इस कार्रवाई में पांच आतंकवादी मारे गए और भारी मात्रा में गोली बारूद उपकरण तथा राइफलें बरामद हुई।

इस प्रकार सिपाही एस० अलफोंस ने अपनी सुरक्षा की बिल्कुल परवाह न करते हुए साहस तथा दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रदर्शन किया।

14. मेजर नीरज सूद (आई०सी०-53228), 6 कुमाऊं

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 18 मई, 1998)

मेजर नीरज सूद ने 17 मई, 1998 की रात्रि में एक घात टुकड़ी का नेतृत्व किया, उन्होंने आसाम के पुरानी भेर

नामक गांव के बाहरी ओर स्थित दो मकानों में बड़ी सटीक व्यूह रचना करके घात लगाई ।

दिनांक 18 मई, 1998 को लगभग 7.30 बजे प्रातः चौकसी करने वाले व्यक्ति ने मेजर नीरज सूद को बताया कि उस स्थान की ओर चार हथियार बंद आतंकवादी बढ़ रहे हैं । घात टुकड़ी ने उन्हें घात क्षेत्र में घुसने दिया और इसके बाद कार्रवाई शुरू कर दी । एक उग्रवादी उस स्थान पर मारा गया परंतु बाकी तीन आतंकवादियों ने पोजीशन लेकर स्वचलित हथियारों से तथा ग्रेनेडों से आक्रमण शुरू कर दिया ।

भारी गोलीबारी से घबराए बिना मेजर नीरज सूद स्वयं एक छोटी टुकड़ी को खुले स्थान पर लेकर पहुंचे और भागते हुए आतंकवादियों पर आक्रमण शुरू कर दिया । जब वे अपनी टुकड़ी को तैनात कर रहे थे एक आतंकवादी दौड़ता हुआ आया और मेजर नीरज सूद पर सीधी गोलीबारी करके भाग निकलने के लिए नजदीकी तालाब में कूद गया । मेजर नीरज सूद ने अपनी टुकड़ी को छिपने को कहा तथा अपनी सुरक्षा की बिल्कुल परवाह न करते हुए आतंकवादी को मार गिराया ।

इस प्रकार मेजर नीरज सूद ने इस प्रकार कठिन श्रम करके विश्वसनीय आसूचना तंत्र स्थापित किया तथा भारी गोलीबारी के सामने उत्कृष्ट सामरिक दक्षता के साथ ही उच्च कोटि के साक्षात और अनुकरणीय नेतृत्व का परिचय दिया ।

15. कैप्टन सुखविंदर सिंह धालीवाल (आई सी–53530) 5/5 गोरखा राईफल्स—(फ्रन्टियर फोर्स)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 22 मई, 1998)

कैप्टन सुखविंदर सिंह धालीवाल 22–5–1998 को मणीपुर के बिसनपुर जिले की खारडाक नदी के तट पर विद्रोहियों के छिपने के एक ठिकाने पर छापा डालने वाले दल के कमांडर थे ।

रात्रि के 12 बजकर 10 मिनट पर बस से उतरने के स्थान पर पहुंचने के बाद आप अपने दल को 5 कि० मी० के दलदल भरे रास्ते से लेकर लक्ष्य बिंदु तक पहुंचे । लक्ष्य के नजदीक पहुंच कर उन्होंने 51 मि० मी० मोर्टार टुकड़ी को सहायक गोलीबारी के लिए तैनात किया और एक दल को सहायक गोलीबारी तथा रास्ता रोकने के लिए पार्श्व में तैनात कर दिया ।

ठिकाने से कोई लगभग 30 मीटर पर पहुंचते ही कैप्टन सुखविंदर सिंह धालीवाल के दल पर ग्रेनेड लांचरों की भारी गोलीबारी शुरू हो गई । यह भांपते हुए कि थोड़ी देरी से भी विद्रोही भाग निकलेंगे, आपने "आयो गोरखाली" युद्ध नारे का उदघोष करते हुए इस ठिकाने पर आक्रमण कर दिया । आपने अकेले 2 विद्रोहियों को गोली से उड़ा दिया । इसके बाद आप इस ठिकाने के अंदर घुस गए । जैसे ही वे इसमें घुस रहे थे एक विद्रोही ए० के० 56 हाथ में लेकर उनके सामने आ खड़ा हुआ परंतु आपने शांत रहकर नजदीक से इस विद्रोही को गोली से उड़ा दिया ।

इसके बाद ठिकाने की तलाशी पर भारी मात्रा में हथियार गोलीबारूद तथा आपराधिक दस्तावेज बरामद हुए । इस छापे से विद्रोहियों के एक बड़े ठिकाने का सफाया हो गया ।

इस प्रकार कैप्टन सुखविंदर सिंह धालीवाल ने दृढ़ नेतृत्व, साहस तथा अत्यंत उच्च कोटि की वीरता का प्रदर्शन किया ।

16. (5452901) राइफलमैन अमर बहादुर गुरुंग, 5/5 गोरखा राइफल (एफ एफ) ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 22 मई, 1998)

22 मई, 1998 को मणिपुर के बिशनपुर जिले की खोरडाक नदी के तटपर विद्रोहियों के छिपने के ठिकाने पर आक्रमण के दौरान राइफलमैन अमर बहादुर गुरुंग एक अधिकारी के सहयोगी थे ।

पांच किलोमीटर की दलदल भरी यात्रा को पूरी करके वे अपने लक्ष्य तक पहुंचे । छुपने के ठिकाने से कोई 30 मीटर दूरी पर वे छोटे स्वचालित हथियारों तथा ग्रेनेड लांचर की भारी गोलीबारी से घिर गए । कुछ मिनट बाद ही विद्रोहियों की ओर से अचानक गोलीबारी बंद हो गई ।

राइफलमैन अमर बहादुर गुरुंग अपने साथी के साथ युद्ध की ललकार (आयो गुरखाली) के साथ इस ठिकाने में घुस गए । बरामदे में तीन सशस्त्र विद्रोहियों ने उनको रोकने की कोशिश की ।

ठिकाने के आंगन में पहुंचने पर अधिकारी ने दो विद्रोहियों को मार गिराया । राईफलमैन अमर बहादुर गुरुंग ने जब देखा कि उनकी राइफल की मैगजीन खाली हो गई है तो उन्होंने तुरंत खुखरी निकाल ली और अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए एक हथियारबंद विद्रोही पर हाथों से ही आक्रमण करके उसे मार गिराया । इसके बाद उन्होंने अपनी मैगजीन बदली और अपने अधिकारी के साथ ठिकाने के अंदर घुस गए ।

इस प्रकार राइफलमैन अमर बहादुर गुरुंग ने अत्यंत विकट परिस्थितियों और विद्रोही की सीधी गोलीबारी के बीच वीरता दिखाई ।

17. (3385328) हवलदार गुरमीत सिंह, 2 सिख ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 25 मई, 1998)

25 मई, 1998 को पक्की सूचना मिलने पर जम्मू और कश्मीर में राजौरी जिले के शालास गांव में उग्रवादियों की तलाशी और खात्मे का अभियान चलाया गया था । हवलदार गुरमीत सिंह इस अभियान में शामिल थे ।

बड़ी तेजी के साथ तत्काल क्षेत्र की घेराबंदी कर ली गई । ललकारे जाने पर उग्रवादियों ने एक घर के अंदर से भारी गोलीबारी शुरु कर दी । जब अन्य सैनिक उग्रवादियों पर गोलीबारी करते रहे हवलदार गुरमीत सिंह हवा में उड़ती गोलियों की परवाह किए बिना उस घर तक पहुंच गए और एक खिड़की से ए० के० 47 की गोलियों की बौछार करदी इस पर उग्रवादी घबरा गए और भागने की कोशिश करने लगे ।

उनके इरादों को भांपकर हवलदार गुरमीत सिंह तथा उनका एक साथी तुरत उस स्थान पर पहुंच गए और जैसे ही ये असामाजिक तत्व बाहर निकले हवलदार गुरमीत सिंह ने बिना अपने जीवन की परवाह किए हुए इन घबराए हुए असामाजिक तत्वों पर धुआंधार गोलीबारी कर दी । इसके बाद भयंकर संघर्ष शुरू हो गया जिसमें हवलदार गुरमीत सिंह ने अकेले ही दोनों उग्रवादियों को मार गिराया । इस संघर्ष के बाद 2 ए० के० 56 राइफलें, 1 रेडियो सेट और भारी मात्रा में गोली बारुद बरामद हुआ ।

इस प्रकार हवलदार गुरमीत सिंह ने अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए उग्रवादियों की गोलीबारी के समक्ष असाधारण वीरता दिखाई ।

18. (124204) राइफलमैन अशोक कुमार जेना,
12 असम राइफल ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 11 जून, 1998)

दिनांक 11 जून, 1999 को राइफलमैन अशोक कुमार जेना ने मणिपुर की विद्रोहग्रस्त इम्फाल घाटी में संयुक्त कार्यवाई में भाग लिया ।

राइफलमैन अशोक कुमार जेना उस दस्ते में शामिल थे जो एक जिप्सी में सवार विद्रोहियों को रोकने के लिए भेजा गया था । तीन दिन तक लगातार कार्रवाई में लगे रहने के बावजूद, राइफलमैन अशोक कुमार जेना ने दृढ़ इच्छा शक्ति और दक्षता से ऊंचे स्थानों को पार करते हुए एक दुष्कर भू-भाग पर अपने दस्ते का मार्ग निर्देशन किया ।

घटना स्थल पर पहुंचने पर राइफलमैन अशोक कुमार जेना घात हेतु बनाए गए आरक्षित दल में शामिल हुए । लगभग 7.00 बजे सांय नेज रफ्तार से आती हुई एक जिप्सी घात-स्थल के बीच कीचड़ में फंस गई और उसमें सवार लोगों ने बाहर कूदकर गोलीबारी शुरू कर दी ।

भारी गोलीबारी से विचलित हुए बिना राइफल मैन अशोक कुमार जेना ने भागते हुए विद्रोहियों पर भयंकर आक्रमण किया और उनके निकट पहुंचकर उन्हें मार गिराया । इस विशिष्ट संक्रिया के परिणामस्वरुप सात कट्टर विद्रोही मारे गए और शस्त्र एवं गोला बारुद बरामद हुआ ।

इस प्रकार राइफलमैन अशोक कुमार जेना ने विद्रोहियों की भारी गोलीबारी के बीच कर्तव्य से बढ़कर बेजोड़ बहादुरी के बेजोड़ कारनामों से युद्धक भावना का परिचय दिया ।

19. सहायक कमांडेंट वजीर सिंह,
(ए आर–196),
12 असम राइफल ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख . 13 जून, 1998)

सहायक कमांडेंट वजीर सिंह उस यूनिट के कम्पनी कमांडर है जो मणिपुर में इंफाल के अत्यंत संवेदनशील क्षेत्र में विद्रोही गतिविधियों से लड़ रही है । इस हृष्ट-पुष्ट और अत्यंत उत्साही अफसर ने विद्रोहियों के साथ अनेक मुकाबलों में उत्कृष्ट योधी नेतृत्व का प्रदर्शन करके अपने एक भी सैनिक की जान गवांए बिना हमेशा विजय प्राप्त की ।

13 जून, 1998 को खतरनाक पर्वतों में 72 घटों की तलाशी संक्रियाओं के बाद इलैक्ट्रानिक इंटरसेप्टर से इम्फाल में पुखाव–सैगोलमांग सड़क पर विद्रोहियों के होने का पता चला । सहायक कमांडेंट वजीर सिंह ने कुशलता से घात लगाई । शीघ्र चेतावनी प्रणाली और सबसे आगे चलकर अगुवाई करने से उनके सैनिक डटे रहने के लिए प्रेरित हुए ।

एक जिप्सी तेजी से आई और घात स्थल के बीच से मुड़ने की कोशिश की जबकि इसमें बैठे व्यक्तियों ने इसमें से कूद कर गोलीबारी शुरु कर दी । दोनों तरफ भारी गोलीबारी हुई और विद्रोहियों ने भाग निकलने की कोशिश की परंतु नाकाम रहे । अपने जीवन के लिए भारी खतरे की परवाह न करते हुए सहायक कमांडेंट वजीर सिंह ने शत्रुओं पर निर्णायक प्रहार करते हुए घातक गोलीबारी शुरु कर दी । इसके परिणामस्वरुप इस संक्रिया में सभी सात आतंकवादी मारे गए और भारी मात्रा में शस्त्रास्त्र-गोलाबारुद और उपस्कर बरामद किए गए ।

इस प्रकार सहायक कमांडेंट वजीर सिंह ने कर्तव्य से आगे बढ़कर असाधारण वीरता और शत्रु की भारी गोलीबारी के सामने उत्कृष्ट नेतृत्व का परिचय दिया ।

20. 9422500 पैराटूपर लाल बहादुर तमंग, 9 पैरा
(विशेष बल)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 16 जून, 1998)।

14–17 जून, 1998 को पैराटूपर लाल बहादुर तमंग जम्मू-कश्मीर में हैफ्ड जंगलों में चलाई संक्रिया के दौरान पांच व्यक्तियों की एक स्क्वाड में अग्रणी स्काउट थे । इस स्क्वाड को इस क्षेत्र में 72 घंटे तलाशी लेने तथा नष्ट करने का कार्य सौंपा गया था ।.

जंगल में दो दिन बिताने के बाद 16 जून, 1998 को पैराट्रूपर लालबहादुर तमंग को कुछ चिन्ह मिले और अगले तीन घंटों से अधिक समय तक आतंकवादियों को खोज का सावधानी से पीछा किया। लगभग 2.00 बजे दोपहर वे जंगल में आतंकवादियों के छिपने के गुप्त ठिकाने के 60 मीटर के भीतर स्काउट को लेकर पहुंचे। अपनी टुकड़ी को छुपकर सहायक गोलाबारी का निर्देश देकर आप चुपचाप निगरानी के लिएआगे बढ़े। अगले दो घंटों में ये एक अफसर के साथ दो शस्त्रधारी आतंकवादियों को छिपने का गुप्त ठिकाना बताते हुए देखते रहे।

लगभग 4.00 बजे सायं आतंकवादी बाहर निकलने की तैयारी कर रहे थे ये चुपके से आतंकवादियों के समीप 8 मीटर की दूरी तक पहुंच गए। जब अधिकारी ने हथगोला फेंका तो दो आतंकवादी गोलाबारी करते हुए बाहर आए। पैराट्रूपर लाल बहादुर तमंग ने बिजली की तेजी से अपनी खुकरी से आतंकवादियों पर धावा बोला और इस तेजी से दोनों आतंकवादियों से सिर काट डाले।

इस प्रकार पैराट्रूपर लाल बहादुर तमंग ने आतंकवादियों के साथ लड़ते हुए साहस, युद्ध कौशल और बिरली सहयोगी भावना का परिचय दिया।

21. मेजर रोहित शर्मा (आई सी–46716), 8 जम्मू–कश्मीर लाइट इंफैंट्री

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 17 जून, 1998)

17 जून, 1998 को अचानक छापा कार्रवाई के रूप में जम्मू-कश्मीर में पुंछ जिले के तिरमल में आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ हुई।

लगभग 1.00 बजे दोपहर अपने स्रोत से गांव में तीन दुर्दांत आतंकवादियों की मौजूदगी का पता चला एक जत्थे को कार्रवाई करने का कार्य सौंपा गया। मेजर रोहित शर्मा ने स्वेच्छा से नेतृत्व लेकर संदिग्ध लोकों से आतंकवादियों को निकालने की कार्रवाई शुरु की।

शीघ्र ही घटनास्थल पर दोनों ओर से भारी गोलीबारी शुरु हो गई और आतंकवादियों द्वारा हथगोलों का इस्तेमाल किया गया। मकान के पिछली तरफ की ओर झाड़ियों से भरा हुआ नाला बच निकलने का संभावित मार्ग था। इस संभावना को भांपते हुए मेजर रोहित शर्मा अपनी सुरक्षा की परवाह न करके रेंगते हुए मकान के पास पहुंचे और एक खिड़की तोड़कर आतंकवादियों पर गोलाबारी करके एक आतंकवादी को मार गिराया। जब वे दूसरी बार फायर कर रहे थे उसी समय दूसरे आतंकवादी ने भी फायर किया। यद्यपि आतंकवादी मारा गया परंतु यह बहादुर अफसर भी बुरी तरह से जख्मी हो गया और घटनास्थल पर ही वीरगति को प्राप्त हो गया। गिरते हुए अफसर द्वारा फैंके गए हथगोले से जब मकान में आग लगी तो तीसरे आतंकवादी को मकान से बाहर निकलना पड़ा जहां उसे मार गिराया।

इस प्रकार मेजर रोहित शर्मा ने उच्चतम कोटि के उत्कृष्ट साहस और बहादुरी का प्रदर्शन किया।

22. मेजर सैयद सिबातुल हसन रिजवी (आई० सी०–51124) —3 कुमाऊं

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 21 जून, 1998)

जम्मू और कश्मीर घाटी के मूल निवासी मेजर सैयद सिबातुल हसन रिजवी उग्रवादियों की ओर से अपने परिवार के सदस्यों और उन्हें दी जा रही निरन्तर धमकियों की परवाह न करते हुए कई सफल संक्रियाओं के लिये उत्तरदायी थे।

छद्मनाम से कार्य करते हुए मेजर सैयद सिबातुल हसन रिजवी ने प्रभावशाली आसूचना नेटवर्क स्थापित कर लिया था और उग्रवादियों के चारों ओर अन्यथा अभेद्य और अपराजेय समझी जाने वाली सुरक्षा दीवार में घुसपैठ कर ली थी। उन दो प्रमुख संक्रियाओं के लिये कार्रवाई किये जाने योग्य आसूचना के लिये विशेष रूप से श्रेय उन्हें ही जाता है जिसके आधार पर ऐसे दस दुर्दान्त उग्रवादियों को खत्म किया जा सका था।

7 अगस्त, 1997 को उग्रवादी की बन्दूक की गोलियों से इन्हें गम्भीर चोटें लगीं। अस्पताल में भर्ती होने तथा कुछ समय के वास्ते चलने-फिरने से मजबूर होने के बाद मेजर सैयद सिबातुल हसन रिजवी पुनः नेमी ताकत और जोश के साथ उग्रवादियों पर टूट पड़े। इसके बाद 25 जनवरी, 1998 को कुख्यात बंधामा हत्याकांड के लिये उत्तरदायी चार उग्रवादियों को मार गिराने का दायित्व इस अफसर ने निभाया।

21 जून, 1998 को मेजर सैयद सिबातुल हसन रिजवी जिला श्रीनगर के शेखपुरा मुहल्ला में सैन्य टुकड़ी लेकर पहुंचे। सर्वोच्च बलिदान देने के वास्ते पूर्णतः तैयार आप अपने साथियों पर राष्ट्र विरोधी तत्वों द्वारा की जा रही भीषण गोलीबारी का मुकाबला करते हुए आगे बढ़ते रहे। उन्हें बांए कन्धे पर गोलियों के गहरे घाव लगे। अत्यधिक रक्तस्राव और प्रचंड पीड़ा की परवाह न करते हुए भीषण आक्रमण करते हुए उन्होंने अकेले ही अविस्मरणीय निकट संघर्ष में उग्रवादी को मार गिराया। आप को जबरदस्ती अस्पताल में दाखिल करवाया गया क्योंकि उस समय तक कार्रवाई में लगे हुए अपने आदमियों को छोड़कर नहीं जाना चाहते थे।

इस प्रकार मेजर सैयद सिबातुल हसन रिजवी ने उग्रवादियों से युद्ध करते हुए वीरता और दृढ़ निष्ठा का प्रदर्शन किया।

23. जे० सी०–179394 सूबेदार शिव सिंह, 7 गढ़वाल राइफल

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख (21 जून, 1998)

21 जून, 1998 को एक संक्रिया के दौरान सूबेदार शिव सिंह के अधीन प्लाटून खोजी दल जब जम्मू कश्मीर में

सफापुरा गांव के बाहरी मकानों की तलाशी ले रहे थे तो उन्हें एक मकान में आंतकवादियों की मौजूदगी का सन्देह हुआ। जब छानबीन की जा रही थी तो लड़ाके विदेशी भाड़े के सिपाहियों ने अंधाधुंध भीषण गोलीबारी शुरू कर दी। सूबेदार शिव सिंह ने तत्काल अपनी प्लाटून को तैनात करके उस मकान की घेराबन्दी कर ली।

आंतकवादियों की गोलाबारी की बौछार से विचलित हुए बिना वे अपने साथी के साथ बगल के मकान की छत पर चढ़ गये ताकि सामरिक दृष्टि से लाभकारी ठिकाने से आंतकवादियों पर गोलाबारी की जा सके। अपनी सुरक्षा की कतई परवाह न करते हुए वे उस मकान की छत पर कूद गये जहां आंतकवादी थे और उन्होंने कृत्रिम छत से एक आंतकवादी को मार गिराया। दूसरे आंतकवादी ने अपना ठिकाना बदलकर सूबेदार शिव सिंह पर भारी गोलीबारी की। सूबेदार शिव सिंह दौड़ लगाकर मकान के प्रथम तल पर पहुंचे और आंतकवादी के सामने अचानक पहुंचकर उसे नजदीक से मार गिराया। इस गोलीबारी में सूबेदार शिव सिंह की दाईं आंख में गोली लगी जिसके कारण वे 21 जून, 1998 को वीरगति को प्राप्त हो गये।

सूबेदार शिव सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, उत्कृष्ट आक्रामकता, दृढ़ निश्चय और असाधारण नेतृत्व का परिचय देते हुए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया।

24. 2479481 लांस नायक नरिन्दर सिंह, 22 राष्ट्रीय राइफल
(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 28 जून, 1998)

28 जून, 1998 को 7.30 बजे प्रातः घात टुकड़ी ने जम्मू कश्मीर में कुपवाड़ा जिले के मछल क्षेत्र में कुछ आंतकवादियों की हलचल देखी। पूरे क्षेत्र की तत्काल घेराबन्दी कर ली गई। लांस नायक नरिन्दर सिंह खोजी दल के सदस्य थे।

खोजी दल का सामना आंतकवादियों के साथ हो गया। लांस नायक नरिन्दर सिंह शुरू में ही जख्मी हो गये। फिर भी वे रेंगते हुए एक बड़े पत्थर के पीछे चले गये और पेड़ के तने के पीछे छुपे बैठे आंतकवादी को मार गिराया। दूसरे आंतकवादी गोलाबारी करते रहे और खोजी दल पर फेंके गये हथगोलों से तीन अन्य रैंक घायल हुए।

अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की कतई परवाह न करते हुए लांस नायक नरिन्दर सिंह अपनी राइफल से गोलीबारी करते रहे। अत्यधिक खून बहने के बावजूद उन्होंने दो हथगोले फेंके। बाद में घटनास्थल पर एक और आंतकवादी मृत पाया गया। उपर्युक्त कार्रवाई के दौरान लांस नायक नरिन्दर सिंह ने आतंकवादियों के साथ लड़ते हुए असाधारण बहादुरी का परिचय दिया और 28 जून, 1998 को राष्ट्र के लिये अपने जीवन का बलिदान कर दिया।

इस प्रकार लांस नायक नरिन्दर सिंह ने आंतकवादियों के साथ लड़ते हुए वीरता का परिचय दिया और सर्वोच्च बलिदान किया।

25. 4062534 हवलदार जगमोहन सिंह, 9 पैरा
(विशेष बल)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 26 जुलाई, 1998)

25–26 जुलाई, 1998 को हवलदार जगमोहन सिंह उस सैन्य टुकड़ी के स्क्वाड कमांडर थे, जिसे जम्मू और कश्मीर के सुरनकोट जिले के बारी भाइक जनरल एरिया में तलाशी लेने एवं आतंकवादियों के ठिकानों को नष्ट करने का कार्य सौंपा गया था।

जब हवलदार जगमोहन सिंह का दस्ता बारी भाइक के लक्ष्य क्षेत्र में पहुंच रहा था तो उनके ऊपर आतंकवादियों ने एक ढोक के भीतर से गोलीबारी की। हवलदार जगमोहन सिंह भारी गोलीबारी के बीच आतंकवादियों के निकट पहुंच गये और उन्होंने सभी बच निकलने के रास्तों को बन्द करने के प्रयोजन से अपने दस्ते को तैनात कर दिया।

आतंकवादियों के साथ गोलीबारी लगभग तीन घण्टे तक चलती रही और उनकी गोलीबारी अधिकाधिक भीषण बनती जा रही थी। यह महसूस करते हुए कि अपने दस्ते को नेस्तनाबूद होने से बचाने के लिये उन्हें कड़ी कार्रवाई करने की आवश्यकता है, हवलदार जगमोहन सिंह आतंकवादियों की गोलियों की बौछारों से भयभीत हुए बिना उस कठिन परिस्थिति का मुकाबला करने के लिये तैयार हो गये। उन्होंने अनुकरणीय वीरता का परिचय देते हुए हथगोले फेंकते हुए और गोलीबारी करते हुए आतंकवादियों के ढोक पर धावा बोल दिया। उनकी निर्भीकता से अन्दर फंसे आतंकवादी किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये तथा परिणामस्वरूप पांच प्रमुख आतंकवादी मारे गये।

हवलदार जगमोहन सिंह ने अपनी सुरक्षा की परवाह किये बिना वीरता एवं साहस का परिचय दिया।

26. कैप्टन तरुण कुमार (आई० सी०–54831),
4 राष्ट्रीय राइफल
(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 09 अगस्त, 1998)

09 अगस्त, 1998 को 10.00 बजे प्रातः जम्मू एवं कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के जागरपुर गांव की घेराबन्दी करने और तलाशी लेने की कार्रवाई की योजना बनाई गई थी। झोपड़ी के चारों ओर की घेराबन्दी में कैप्टन तरुण कुमार को भी तैनात किया गया था। 9.15 बजे रात्रि आंतकवादियों ने उनकी घेराबन्दी से भाग निकलने का प्रयास किया।

इस अफसर ने अनुकरणीय साहस का परिचय देते हुएह अपने रेडियो आपरेटर के साथ अत्यधिक निकट से आंतकवादियों को भयंकर गोलीबारी में उलझाए रखा। आपने एक आंतकवादी को मार गिराया। उसी समय इन पर एक अन्य आंतकवादी ने लगभग पांच मीटर की दूरी से गोली चलाई।

गम्भीर चोट लगने पर भी इस अफसर ने उस आंतकवादी पर हिप पोजिशन से गोली चलाई और उसे मार गिराया। इस आंतकवादी ने मरने से पहले इस अफसर पर एक हथगोला फेंका जिससे यह अफसर और उसका रेडियो आपरेटर दोनों ही मारे गये।

इस अफसर के असाधारण साहस और अदम्य वीरता से आंतकवादियों के बच निकलने का रास्ता बन्द हो गया, जिसके परिणामस्वरूप सभी आंतकवादी फंस गये। इसके फलस्वरूप कुल मिलाकर बारह आंतकवादी मारे गये, जिनमें इस अफसर द्वारा मारे गये दो आंतकवादी भी शामिल थे।

कैप्टन तरुण कुमार ने कर्त्तव्य से बढ़कर अनुकरणीय साहस और वीरता का परिचय दिया तथा सर्वोच्च बलिदान किया।

27. जी० एम० 171418, डब्ल्यू० मैकेनिकल ट्रांसपोर्ट ड्राइवर जबर सिंह

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 10 अगस्त, 1998)

591 (स्वतन्त्र) प्लाटून परियोजना हिमांक के मैकेनिकल ट्रांसपोर्ट ड्राईवर जबर सिंह सामान/कार्मिकों आदि को लाने ले जाने के लिये कारगिल सैक्टर (जम्मू-कश्मीर) में 55 सड़क निर्माण कम्पनी (परियोजना) हिमांक में तैनात थे।

10 अगस्त, 1998 को एम० टी० ड्राइवर जबर सिंह को कारगिल स्थित सप्लाई डिपो से राशन लाने के लिये तैनात किया गया। वे जब 3 बजे अपराह्न अपनी यूनिट में पहुंचे उस समय उस क्षेत्र में नियंत्रण रेखा के उस पार से तोपों से भारी गोलीबारी हो रही थी। पहले वे समीप के एक बंकर में घुस गये किन्तु अपने वाहन को खुले स्थान पर खड़ा देखकर वे अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए वे बाहर निकले ताकि वे वाहन को लेजाकर सुरक्षित स्थान पर खड़ा कर सकें। जब वे अपने सुरक्षित बंकर की ओर लौट रहे थे तो उन्होंने देखा कि पायनियर चुन्नू टुडू जमीन पर गिर हुए हैं और उनके शरीर पर बम के टुकड़ों से हुए घावों से अत्यधिक रक्त बह रहा है। एम० टी० ड्राइवर जबर सिंह अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन करते हुए जख्मी पायनियर की सहायता के लिये बढ़े। जब व घायल पायनियर को वहां से निकालकर सुरक्षित स्थान पर ले जा रहे थे तभी उन्हें भी बम का टुकड़ा आ लगा। किन्तु उन्होंने घायल पायनियर चुन्नू टुडू को वहां नहीं छोड़ा और घायल पायनियर को तब तक खींच कर ले जाते रहे जब तक कि व अपने घावों के कारण स्वयं अचेत होकर गिर नहीं गये। एम० टी० ड्राइवर जबर सिंह को 92 बैस सैन्य अस्पताल ले जाया गया जहां अपने जख्मों के कारण 13 अगस्त, 98 को दोपहर 3 बजकर 15 मिनट पर उनकी मृत्यु हो गई।

मैकनिकल ट्रांसपोर्ट जबर सिंह ने तोपों की जबरदस्त गोलाबारी के बावजूद अपने साथी की जान बचाने के प्रयास में असाधारण साहस और वीरता का परिचय देते हुए अपना जीवन न्यौछावर कर दिया।

28. जी० एस० 173254 पी० पायनियर चुन्नु टुडू

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 10 अगस्त, 1998)

326 सर्फेसिंग प्लाटून (ग्रेफ) परियोजना हिमांक के जी० एस० 173254 पी० पायनियर चुन्नू टुडू को जम्मू तथा कश्मीर के कारगिल में स्थित मुख्यालय 55 सड़क निर्माण कम्पनी (ग्रेफ) में सन्तरी के रूप में तैनात किया गया था।

दिनांक 10 अगस्त 1998 को लगभग 1500 बजे, पाकिस्तानी सैनिकों द्वारा यूनिट कैम्प को लक्ष्य बनाकर फायरिंग की गई। सभी कार्मिक सुरक्षा के लिये बंकरों के भीतर घुसे। लगभग एक घण्टे बाद जैसे ही गोलाबारी बन्द हुई पायनियर चुन्नू टुडु और अन्य सभी कार्मिक अपनी ड्यूटी शुरु करने के लिये बकरों से बाहर आने लगे।

अचानक नियंत्रण रेखा के पार से गोलाबारी पुनः शुरु हो गई। जब पायनियर चुन्नू टुडु बंकर से मुश्किल से 50 मीटर दूर थे तो उन्हें अपने बंकरों की दिशा में आता हुआ एक गोला दिखाई दिया। खतरे को भांपते हुए पायनियर चुन्नू टुडु ने खतरे की चेतावनी दी और बंकरों से बाहर आते हुए सभी सैनिकों को अपने बंकरों में वापिस जाने के लिये कहा। अपनी सुरक्षा की किंचित भी परवाह किये बिना, अधिकांश कार्मिकों को वापिस सुरक्षित क्षेत्र में जाने के लिए अपना सन्देश सूचित करने की खातिर वे ऊपर ही रहे। तथापि, इसी बीच एक और गोला उनके नजदीक गिरा जिससे उनकी उसी स्थल पर मृत्यु हो गई। उनकी प्रत्युत्पन्नमति और उनके द्वारा की गई तात्कालिक कार्रवाई से बहुत से लोग हताहत होने से बच गये।

इस प्रकार पायनियर चुन्नू टुडू ने अपनी सुरक्षा की किंचित भी परवाह किये बिना अत्यन्त उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

29. 750020046 सहायक कमांडेंट अशोक कुमार राणा, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 02 नवम्बर, 1998)

विशिष्ट सूचना प्राप्त होने पर, सहायक कमांडेंट अशोक कुमार राणा ने भारत तिब्बत सीमा पुलिस की अन्य टुकड़ियों

के साथ 02 नवम्बर, 1998 को मुंह अंधेरे जम्मू तथा कश्मीर के अनन्तनाग जिले में चिरवार गांव की घेराबन्दी की।

सभी ग्रामीणों को सावधान करते हुए उनसे अपने घरों से बाहर आने का अनुरोध किया गया, ताकि उन्हें सुरक्षित स्थान पर रखा जा सके। छह विदेशी आंतकवादी एक घर से बाहर निकले और उन्होंने अन्धाधुन्ध गोलीबारी शुरू कर दी। सहायक कमांडेंट अशोककुमार राणा ने ग्रामीणों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के बाद अपनी पार्टी के आगे रहकर नेतृत्व करते हुए गोलीबारी कर रहे आंतकवादियों के विरूद्ध जवाबी हमला किया और दो भाड़े के कट्टर विदेशी सैनिकों को मार गिराया।

जब उसने अन्य आंतकवादियों को मारने के लिये निशाना साधा तो उसके हथियार से गोली नहीं चल पाई और इस स्थिति का लाभ उठाते हुए आंतकवादियों ने गोलियों की बौछार कर दी। चार गोलियों से घातक रूप से घायल होने पर भी उसने अपने सैनिकों का प्रोत्साहित किया और उन्हें सुरक्षित स्थान पर छुपकर आंतकवादियों पर गोलीबारी करने का निर्देश दिया।

उसके दृढ़ निश्चय और अपने सैनिकों का समझदारी से निर्देशन के फलस्वरूप पांच कट्टर आंतकवादी मारे गये और बड़ी मात्रा में हथियार, गोला बारूद, वायर लैस सैट, प्रशिक्षण साहित्य और खुफिया महत्व की अन्य सामग्री बरामद हुई।

इस प्रकार, सहायक कमांडेंट अशोक कुमार राणा ने भीषण गोलीबारी का सामना करते हुए अपनी सुरक्षा की किंचित भी चिन्ता न करते हुए दृढ़ संकल्प और वीरता का परिचय दिया तथा सर्वोच्च बलिदान किया।

बरूण मित्रा,
राष्ट्रपति का उप-सचिव

संचार मंत्रालय

(दूरसंचार विभाग)

नई दिल्ली-110 001, दिनांक 15 मार्च 1999

संकल्प

सं. ई-11020/1/98-राजभाषा—भारत सरकार एतद्द्वारा संचार मंत्रालय, दूरसंचार विभाग की हिन्दी सलाहकार समिति का पुनर्गठन निम्न प्रकार से करती है :—

अध्यक्ष

1. संचार मंत्री

उपाध्यक्ष

2. संचार राज्य मंत्री

संसदीय कार्य मंत्रालय द्वारा नामित गैर-सरकारी सदस्य लोक सभा से :

सदस्य

3. श्रीमती ऊषा मीणा
4. श्री के. पलानी स्वामी

राज्य सभा से :

सदस्य

5. श्री दीना नाथ मिश्रा
6. डा. बी. बी. दत्ता

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा नामित गैर-सरकारी सदस्य

सदस्य

7. श्री राजो सिंह
8. डा. एस. वेणुगोपालाचारी

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद के प्रतिनिधि

सदस्य

9. श्री हरि बाबू कंसल,
ई-9/23, बसंत विहार,
नई दिल्ली-110 057

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

10. प्रो. अनन्तराम त्रिपाठी,
प्रधानमंत्री,
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,
पो.ओ. हिन्दी नगर, वर्धा,
(महाराष्ट्र) पिन-442 003

राजभाषा विभाग द्वारा नामित गैर-सरकारी सदस्य

सदस्य

11. डा. आर. सुरेन्द्रन,
साकेत—चेलेंबा-673634
केरल

सदस्य

12. डा. वीरेन्द्र कुमार दुबे,
1595, नैपियर टाउन,
जबलपुर-482001
मध्य प्रदेश

13. डा. सियाराम तिवारी,
हिन्दी भवन, शांति निकेतन,
पश्चिम बंगाल-731 235

दूरसंचार विभाग द्वारा नामित गैर-सरकारी सदस्य

सदस्य

14. श्री कृष्ण कुमार शेखर
एफ.बी. 16, टैगोर गार्डन
नई दिल्ली-110027

सदस्य

15. प्रो. वाचस्पति उपाध्याय
उप कुलपति लाल बहादुर शास्त्री
राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ
नई दिल्ली-110016

16 श्री तरुण विजय
संपादक, पांचजन्य, नई दिल्ली

17. प्रो. (सुश्री) चारु मित्तल
ए-15, शान्ति निकेतन
नई दिल्ली-110021

अधिकारी गण

राजभाषा विभाग

सदस्य

18. सचिव

19. संयुक्त सचिव

दूरसंचार विभाग

सदस्य

20. सचिव

21. अपर सचिव

22. सदस्य (सेवाएं)

23. सदस्य (उत्पादन)

24. सदस्य (वित्त)

सदस्य

25. सदस्य (प्रौद्योगिकी)

26. संयुक्त सचिव

27. अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
हिन्दुस्तान टेलीप्रिंटर्स लि., मद्रास

28. अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
विदेश संचार निगम लि., मुम्बई

29. अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
इण्डियन टेलीफोन इंडस्ट्रीज
बैंगलूर

30. अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
टेलीकम्युनिकेशन्स कन्सलटेंट
इण्डिया लिमिटेड, नई दिल्ली

31. अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
महानगर टेलीफोन्स निगम लि.
नई दिल्ली

32. निदेशक, अनुश्रवण संगठन
पुष्प भवन, नई दिल्ली

33. कार्यकारी निदेशक
टेलीमेटिक्स विकास केन्द्र,
नई दिल्ली

सदस्य सचिव

34. निदेशक (राजभाषा)

2. कार्य

समिति का काम संविधान, राजभाषा अधिनियम और नियमों में दिए गए राजभाषा से संबंधित प्रावधानों के कार्यान्वयन और केन्द्रीय हिन्दी समिति की नीति संबंधी निर्णयों और राजभाषा विभाग द्वारा जारी किए गए अनुदेशों के संबंध में और दूर-संचार विभाग में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के संबंध में सरकार को सलाह देना है ।

3. कार्यकाल

समिति के सदस्यों का कार्यकाल समिति के गठन की तारीख से, निम्नलिखित शर्तों के अधीन, तीन वर्ष होगा :—

(क) जो संसद सदस्य समिति के सदस्य हैं, वे संसद सदस्य न रहने पर इस समिति के सदस्य नहीं रहेंगे ।

(ख) समिति के पदेन सदस्य अपने पद पर कार्य करते रहने तक ही समिति के सदस्य रहेंगे ।

(ग) किसी सदस्य की मृत्यु हो जाने के कारण अथवा समिति की सदस्यता से त्यागपत्र दे देने के कारण खाली हुए स्थान पर मनोनीत सदस्य समिति के तीन वर्ष के कार्यकाल की शेष अवधि के लिए ही सदस्य होगा ।

4. यात्रा भत्ता तथा अन्य भत्ते :

गैर सरकारी सदस्यों को समिति की बैठकों में भाग लेने के लिए भारत सरकार द्वारा समय-समय पर निश्चित दरों पर यात्रा तथा दैनिक भत्ते राजभाषा विभाग के दिनांक 22 जनवरी, 1987 के कार्यालय ज्ञापन सं. 11/20034/4/86-रा भा. (क-2) में दिए गए निदेशों के अनुसार दिए जाएंगे ।

5. आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की प्रति भारत के राजपत्र में प्रकाशित की जाए ।

गुरदीप सिंह
संयुक्त सचिव

रेल मंत्रालय

(रेलवे बोर्ड)

नई दिल्ली, दिनांक 10 मार्च 1999

संकल्प

सं. हिन्दी/समिति/98/38/17—भारत सरकार (रेल मंत्रालय) ने 26-10-98 के संकल्प सं. हिन्दी/समिति/98/38/1 के अंतर्गत रेल मंत्रालय में गठित रेलवे हिन्दी सलाहकार समिति की एक उप समिति गठित करने का विनिश्चय किया है। यह उप समिति मुख्य रूप से रेलवे स्टालों पर उत्कृष्ट साहित्य सुझाने के लिए अपने सुझाव देगी। उप समिति का गठन और कार्यकलाप इस प्रकार होंगे :—

1. गठन

सदस्य

1. श्रीमती मृणाल पांडेय,
बी-249, मालवा सिंह ब्लाक,
एशियन गेम्स विलेज, नई दिल्ली-110016
फोन : 6493167

2. श्री राहुल देव
देवाशिष, 44-ए, ई-13, मुखर्जी नगर,
नई दिल्ली-110018
फोन : 5190171

3. श्री विकास कुमार झा,
106, आधारशिला काम्प्लैक्स,
गांधी मैदान, पटना-800001
फोन : 0621/664338

4. श्री आलोक मेहता,
ए-16, नवभारत टाइम्स अपार्टमेन्ट्स,
मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली-110092
फोन : 3317482

सरकारी सदस्य

5. कार्यपालक निदेशक, यात्री विपणन,
रेलवे बोर्ड,
नई दिल्ली

संयोजक

6. निदेशक, राजभाषा,
रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली

2. उप समिति की बैठकें आवश्यकतानुसार समय-समय पर बुलाई जा सकेंगी।

3. कार्यकाल

इस उप समिति का कार्यकाल वर्तमान रेलवे हिंदी सलाहकार समिति के कार्यकाल तक अर्थात् 25-10-2001 तक रहेगा।

4. यात्रा/दैनिक भत्ता

उप समिति की बैठकों में भाग लेने के लिए समिति के गैर-सरकारी सदस्यों को यात्रा तथा दैनिक भत्ते आदि का नियमन रेलवे हिंदी सलाहकार-समिति के गैर-सरकारी सदस्यों के संबंध में लागू आदेशों के अंतर्गत किया जाएगा।

5. कार्यकलाप

इस उप समिति के मुख्य रूप से निम्नलिखित कार्यकलाप होंगे :—

5.1 रेलवे स्टालों पर उत्कृष्ट साहित्य सुझाने के कार्य।

5.2. रेलवे प्लेटफार्मों का उपयोग कला, संस्कृति और साहित्य को आगे बढ़ाने के लिए किए जाने के उपायों पर विचार करना।

5.3. रेलवे की पत्रिकाओं को और अधिक सुरुचिपूर्ण और पठनीय बनाने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन करना।

6. प्रधान कार्यालय

इस समिति का प्रधान कार्यालय रेल भवन, नई दिल्ली में होगा। लेकिन इसकी बैठकें आवश्यकतानुसार दिल्ली से बाहर भी बुलाई जा सकेंगी।

आदेश

यह आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रति प्रधानमंत्री कार्यालय, मंत्रिमंडल सचिवालय, संसदीय कार्य विभाग, लोक सभा तथा राज्य सभा सचिवालय और भारत सरकार के सभी मंत्रालयों तथा विभागों को भेज दी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि सर्वसाधारण की सूचना के लिए यह संकल्प भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

पी. पी. त्रिपाठी
सचिव, रेलवे बोर्ड एवं
पदेन अपर सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1999

No. 49-Pres/99.—The President is pleased to approve the award of Kirti Chakra to the undermentioned persons for the acts of conspicuous gallantry :—

1. 3988401 Sepoy Sanjeev Singh, 18 Dogra (Posthumous)

(Effective date of the award 07 February, 1998)

From 07 February to 09 February 1998 Sepoy Sanjeev Singh took part in an operation in the area of village Chamrer (Surankot Sector) in Jammu and Kashmir. Sepoy Sanjeev Singh was the scout of the column during the operation.

As he approached a stretch of thick jungle, he was fired upon by militants injuring him critically. Despite bleeding profusely and under intense fire of automatic weapons, Sepoy Sanjeev Singh crawled to a vantage point from where he could fire effectively for his platoon to deploy.

Unmindful of his safety, he rushed forward and pounched over a militant who was firing continuously at the platoon and killed the militant in a close hand to hand combat.

Sepoy Sanjeev Singh displayed indomitable courage and presence of mind in the face of militant fire. He despite being greviously wounded, continued to engage the militants thus preventing casualties to his platoon. He expired when being evacuated on 27 February 1998, as a bullet lodged in his spine could not be removed.

Sepoy Sanjeev Singh displayed conspicuous gallantry unparalleled tenacity, devotion to service beyond the call of duty and spirit of self sacrifice.

2. 2589180 Naik Gee Varghese KD, 14 Assam Regiment (Posthumous)

(Effective date of the award 26th March, 1998)

On 26 March 1998, at 0940 hours based on actionable intelligence that part of an action group of insurgents was hiding out at village Pakhaga in Kokrajhar District of Assam, a Quick Reaction Team rushed to the hideout. Naik Gee Varshese KD was part of this Quick Reaction Team.

Seeing the team approach the hideout, five militants ran out. Naik Gee Varghese KD along with two other team members rushed towards two of the militants who had taken cover and were engaging the team effectively. As he was closing in on the militants, Naik Gee Varghese KD was hit by a bullet on his left upper thigh.

Unmindful of the injury and his personal safety, Naik Gee Varghese KD in an unparalleled act of valour and courage, crawled within three meters of a militant and shot him in the head, killing him on the spot. Before losing consciousness, he continued to exhort his team members to complete the task.

During the entire operation Naik Gee Varghese KD despite being mortally wounded exhorted his team which resulted in the unprecedented killing of five hard core militants and recovery of four AK-56 Rifles along with ten magazines and 246 live rounds of ammunition. Naik Gee Varghese KD succumbed to his injuries while being evacuated on 26 March 1998.

Naik Gee Varghese KD displayed valiant act of bravery, audicity, unflinching devotion to duty and made the supreme sacrifice while fighting the militants.

3. 13613888 Havildar Badri Lal Lunawat, 10 Para (SF).

(Effective date of the award 16 October, 1998)

Havildar Badri Lal Lunawat was a squad Commander in multiple ambushes laid by his team in village Nagradnar District Kupwara in Jammu and Kashmir.

On 16 October 1998, at 1900 hours, the ambushes began moving towards the rendezvous, terminating the operation. At 1930 hours Havildar Badri Lal Lunawat noticed four persons moving towards them through the darkness. Mistaking them as his Commander's squad. He allowed them to come forward but these persons were actually militants. Due to dark night, the militants also mistook the halting squad to be militants and moved towards them. The first militant extended his hand to greet Havildar Badri Lal Lunawat saying 'Assalam Walekum'.

Realizing the mistake, in a flash he pushed the militant and simultaneously fired. The leading militants fired back injuring him grievously in his left arm. Despite a profusely bleeding gun shot wound, he fired automatic bursts using his right arm, injuring two fleeing militants. He then crawled ahead fearlessly and lobbed two hand grenades, injuring them seriously and ultimately resulting in their death. He fell unconscious due to excessive bleeding and exhaustion.

Havildar Badri Lal Lunawat displayed extraordinary courage, camaraderie and devotion to service beyond the call of duty.

BARUN MITRA
Dy. Secy to the President.

No. 50-Pres/99.—The President is pleased to approve the award of Vir Chakra to the undermentioned person for acts of gallantry in the face of enemy :—

Captain Suman Dasgupta (IC-54084) 15 Assam Regiment (Posthumous)

(Effective date of the ward 06 June, 1998)

Captain Suman Dasgupta was commanding a post in the Saichen Glacier since 10 May 1998.

On 06 June 1998 at 1930 hours he was in the Sentry bunker with an other rank. He observed movement 1500 metres away from own post. The enemy personnel were moving towards the Actual Ground Position line in a suspicious manner. He opened fire on them with a Medium Machine Gun and dropped two of the enemy personnel to the ground. In retaliation the enemy started firing 82 mm Mortars and fired approximately 150 rounds.

Despite this heavy firing, regardless of his personal safety, he kept engaging the enemy post to prevent any kind of movement by the enemy. In this process he got hit by Mortar splinters through the loophole of the sentry bunker and succumbed to his injuries on the spot.

Captain Suman Dasgupta set a personal example of courage, selfless service, regardless of his personal safety under protracted enemy fire.

BARUN MITRA
Dy. Secy to the President.

No. 51-Pres/99.—The President is pleased to approve the award of Shaurya Chakra to the undermentioned persons for acts of gallantry :—

1. Shri Biraj Dey, Calcutta, West Bengal (Posthumous)

(Effective date of the award 15 May 1997)

On 15-5-1997 at about 1800 hrs, three miscreants with the intention of committing robbery entered inside the office of a travelling agency named "Monica Travels" at 71, Ganesh Ch. Avenue. On being resisted, they tried to escaped but on hearing "catch the decoits" Shri Biraj Dey chased the miscreants by riding his bicycle and he ultimately succeeded in catching hold of one of the miscreant in Gokul Boral St. At this stage one of the other associates fired at Biraj Dey through a gun when the bullet pierced his back and went through his heart causing serious injuries. He immediately fell down and was rushed to the Hospital by his brother and other eye witness. He was operated there but finally he expired at about 2230 hrs. After the incident, the miscreants ran towards different directions but one of them was caught hold of by the members of the public and later on arrested by the police.

Shri Biraj Dey by making supreme sacrifice of his life thus foiled robbery attempt.

2. 4064683 Lance Naik Ram Singh, 16 Garhwal Rifles

(Effective date of the award 25 June, 1997)

On 25 June 1997, Lance Naik Ram Singh formed part of an ambush on Panthi Spur on the line of control in the Northern Sector. The ambush encountered a group of heavily armed militants who were attempting to infiltrate. During the fire fight some militants ran towards Panthi Spur to escape back towards the line of control.

On hearing the sound of fierce firefight, Lance Naik Ram Singh dashed towards the militants and fired upon them to effectively cut off their escape route at a very close range. Head Lance Naik Ram Singh not reacted spontaneously the militants would have easily exploited the thick foliage and escaped across the line of control.

The militants reacted with very heavy volume of fire on Lance Naik Ram Singh and tried to escape by keeping Lance Naik Ram Singh's head down. Unfortunately when Lance Naik Ram Singh closed up with the militants, he ran out of ammunition.

He drew out his Khukri and flung himself at one militant. This gallant charge astounded the militant. Lance Naik Ram Singh's Khukri tore apart the hostile's stomach killing him instantly. The rare and daring feat of raw courage displayed by Lance Naik Ram Singh has been extraordinary in the annals of the Indian Army and has immensly contributed to the resounding success of the operation in which six mercenaries were killed and a huge cache of arms, ammunition and equipment were recovered.

Lance Naik Ram Singh displayed gallantry much beyond the call of duty.

3. 14367197 Sepoy Sukhbir Singh, General Duties (Posthumous)

(Effective date of the award 18 August, 1997)

Sukhbir Singh was on the posted strength of 914 DSC Platoon attached to HQ CAC (U), AF since 05 Apr 97.

While on annual leave in his native village Khandasa, Gurgaon (Haryana) Sepoy Sukhbir Singh noticed some thieves stealing items from the godown of Jaipur Golden Transport Company by breaking through the wall. He woke up his four brothers and a neighbour and armed with sticks. They all went to the site of the robbery. They surrounded the godown of the Transport Company as the thieves tried to escape in a Maruti Van. The criminals were brandishing knives and revolvers and warned Sepoy Sukhbir Singh and party not to interfere. Undeterred, Sukhbir Singh caught hold of the driver of the van. In the ensuing scuffle he was fired upon by another person sitting in the rear. The Sepoy was hit in the chest and fell to the ground, seriously wounded. He succumbed to the injury on the way to the hospital.

Sepoy Sukhbir Singh displayed valour in engaging the criminals with scant regard to his own safety and sacrifice his life to save the property which did not belong to him.

4. Shri Nihal Chand Bishnoi, Bikaner, Rajasthan (Posthumous)

(Effective date of the ward 3 October 1997)

On 3-10-1997 some poachers armed with modern weapons reached village Badnu of District Bikaner and started hunting deers. They killed six deers by opening fire. On hearing the sound of gun, Shri Nihal Chand Bishnoi collected villagers and tried to stop the poachers. The poachers opened fire on the villagers. But Shri Bishnoi did not stop there and chased the poachers who had to run away leaving the killed deers at the site. They also shot at Shri Bishnoi, who got seriously wounded from the bullets of the poachers. A little later, Shri Bishnoi succumbed to his injuries.

Shri Nihar Chand Bishnoi thus made the supreme sacrifice to hold the Bishnoi tradition to protecting the wild animals from poachers.

5. 2688630 Lance Naik Jaibir Singh, 15 Grenadiers (Posthumous)

(Effective date of the award 06 January, 1998)

On 06 January 1998, Lance Naik Jaibir Singh was Scout No. 2 of the platoon tasked to flush out the militants from their jungle hideout in village Ganta, Tehsil Paoni in Jammu and Kashmir.

When the militants pinned down the platoon from a dominating position, posing mortal danger to all, Lance Naik Jaibir Singh seized with the gravity of the situation, goaded Scout No. 1 to a fire position, who was later struck on his bullet proof patka. Left alone in the murderous fire, Lance Naik Jaibir Singh with utter disregard to personal safety moved ahead to engage the militants resulting in the militants vacating their position. Seizing the opportunity, Lance Naik Jaibir Singh engaged and killed one militant but in the bargain was hit on the back and legs and succumbed to his injuries on 06 January 1998.

Lance Naik Jaibir Singh displayed a sterling example of soldierly conduct, selfless sacrifice and raw personal courage in the face of odds.

6. Major Inderjeet Singh (IC-48640) 34 Rashtriya Rifles

(Effective date of the award 03 February, 1998)

On 03 February 1998 Major Inderjeet Singh moved his company at, midnight to cordon village Chak Dewan Lachhmandas in Badgam District, Jammu and Kashmir.

During the search he detected an underground stronghold of the militants. When probed, the militants opened indiscriminate fire on the search party. Undeterred the officer immediately cordoned off the entire group of houses to prevent the militants escape. At 1330 hours a militant attempted to escape under cover of heavy fire. Major Inderjeet Singh putting his own life at a grave risk of his life spontaneously accousted him and shot him dead at close quarters.

Another militant, when spotted at 1800 hours in another building, engaged the search party with sophisticated grenade launcher and automatic fire. Sensing his desperation and the approaching darkness, Major Inderjeet Singh exhibiting courage beyond the call of duty, closed in with the house with total contempt for the flying lead. Judging the position of the militant accurately he kicked open the door, exposing himself perilously, and shot the militant dead in a flash with precision.

Major Inderjeet Singh, thus, led his company bravely and brought the operation to a logical and successful conclusion.

7. Major Syed Ali Usman (IC-46931) 8 Assam Regiment

(Effective date of the award 20 February, 1998)

On 20 February 1998, based on information about a hideout of houses in village Kuwariguri in Bodo dominated belt north of Gohpur in Assam, Major Syed Ali Usman planned a route along the most difficult approach to ensure cover, concealment and maximum surprise.

As his raid group closed in at the suspected group of houses, Major Syed Ali Usman ordered for a running cordon to be laid. While the cordon was being established, the militan's opened fire at the column and tried to make their escape. Seeing the militants getting away, the officer with his AK-47 rifle in hip position killed one of them. Subsequent operations led to the elimination of another hardcore militant and recoveries of Arms and Ammunition.

Major Syed Ali Usman displayed unparalleled bravery exemplary courage and sterling leadership disregarding threat to his personal safety.

8. 4177952 Naik Urba Datt, 3 Kumaon (Posthumous)

(Effective date of the award 24 February, 1998)

On 23 February 1998, specific information was received that militants tasked for laying Improvised Explosive Device

on a VIP's convoy were hiding in village Salura, District Srinagar in Jammu and Kashmir.

A cordon was laid around Sofi Mohalla, Salura by 2100 hours. No move out was possible due to tight cordon which averted laying Improvised Explosives Devices by Anti national elements. Around 1100 hours, while searching the last outskirt house, Naik Urba Datt detected movement on roof top haystack. He fired on the haystack but anti national elements jumped into the Nallah and escaped towards Nambal forest.

Naik Urba Datt took initiative, jumped into the Nallah having waistdeep water and daringly chased the anti national elements who were firing indiscriminately. When Naik Urba Datt was about ten metres away, anti national elements hid behind the trees, fired at him. Bleeding profusely, risking his life Naik Urba Datt assualted and shot dead one anti national element and injured seriously the second who also succumbed to his injuries later. The valiant soldier however succumbed to his own injuries on 24 February 1998.

Naik Urba Datt displayed indomitable courage, gallantry, and made supreme sacrifice in the highest traditions of the Indian Army.

9. 8026254 Naik Ram Singh, Pioneers Corps (Posthumous)

(Effective date of the Award 04 March 1998)

On 04 March 1998 Naik Ram Singh was returning by Brahmputra Mail after completion of temporary duty. When the train reached Malda Railway Station, some miscreants boarded the train, and started looting the passengers at gun point.

Naik Ram Singh, a true soldier could not tolerate this and challenged these five/six individuals to prevent his fellow passengers from being looted. He grappled with the dacoits bravely, with total disregard to his personal safety.

Inspite of being outnumbered, he fought single handedly when other co-passengers stood as mute spectators without extending any help. He was shot twice by the miscreants and inspite of being severely wounded continued to fight. Seeing his daring act, the Ticket Examiner, gathered courage and also tried to fight the dacoits. Together they were successful in forceing the dacoits out of the train at Eklakhi railway station. Naik Ram Singh was evacuated to the Hospital where he succumbed to the gunshot wounds on 16 March 1998.

Naik Ram Singh displayed raw courage and gave his life to safeguard the lives of co-passengers.

10. Major Santosh Prabhakar (IC-48157) 14 Maratha Light Infantry (Posthumous)

(Effective date of the award 20 March, 1998)

On 20 March 1998 Major Santosh Prabhakar received information regarding likelihood of some insurgents staying at village Radhabari in West Tripura. He led a party to apprehend the insurgents.

At 2110 hours as the party drew near village Radhabari, insurgents threw a beam of light on the party and simultaneously opened heavy fire with AK-56 rifles and Light Machine Guns on the party.

Major Santosh Prabhakar pushed two of his men away from the beam of light. In doing so he was hit by a burst on his shoulder and was thrown back. Seriously injured and bleeding profusely, he quickly regained his composure and began bringing down fire on the insurgents. He quickly realised that his fire was not having any effect on the insurgents since they were firing from behind a mound.

Sensing danger and to save his party Major Santosh Prabhakar, unmindful of his wounds, charged toward the firing insurgents. During this charge of about 20 metres, he got few bursts in his chest and abdomen but he continued his charge and killed one insurgent with point blank fire. His body shattered, he then turned towards the second insurgent but fell down and was found lying about three metres ahead of the dead insurgent.

Major Santosh Prabhakar, thus, executed extremely gallant and selfless action in which he saved the life of his party and made supreme sacrifice.

11. Major Sugato Sen (IC-51711) 14 Assam Regiment

(Effective date of the award 26 March, 1998)

On 26 March 1998 at 0940 hours, based on actionable intelligence that part of an action group of militants was hiding at village Pakihaga in Kokrajhar District of Assam, Major Sugato Sen Officer Commanding 'C' Company made a quick appreciation and decided to exploit the opportunity.

Moving in broad daylight, Major Sugato Sen closed in and got the hideout cordoned. Five militants rushed out of a hut firing at his team. Ordering the team to split in two, Major Sugato Sen along with two other ranks rushed towards two insurgents who were firing at them with automatic weapons. Unmindful of his personal safety, he fired and killed one militant on the spot. Thereafter, he guided and exhorted his team to complete the task, providing covering fire.

During the entire operation, Major Sugato Sen, led from the front which resulted in the killing of five hard core militants and recovery of four AK 56 Rifles along with ammunition.

Major Sugato Sen displayed gallant act of valour, comradeship and dedication to duty with total disregard to personal safety.

12. Captain Ganesh Singh Bhandari (IC-49135) Rajputana Rifles

(Effective date of the award 15 April, 1998)

On 07 April 1998, Captain Ganesh Singh Bhandari being familiar with the area and the insurgent activities led many daring operations in Nagaland. As part of the Quick Reaction Team, he raided a house and recovered ammunition and incriminating documents of intelligence value. On the same day, multiple snatch operations were launched by units of the formation which led to apprehension of fourteen suspects. Again on 8 April 1998, he personally apprehended four hardcore insurgents. On 10 April 1998 without respite, he pursued lead after lead provided by the captured insurgents, apprehending four hardcore insurgents in a stealth operation through unprotected routes in remote areas.

On night of 15 April 1998, he tracked the presence of armed undergrounds in Mokokchung. He immediately led a Quick Reaction Team led the entry into a suspected house. Even as one of the occupants tried to reach out for his loaded weapon, Captain Ganesh Singh Bhandari pounced on him and physically overpowered him. In this operation he captured four hardcore insurgents.

Captain Ganesh Singh Bhandari, thus, displayed unflinching bravely, professionalism, immense contributions beyond the call of duty.

13. 2596054 Sepoy S Alphonse, 2 Madras (Posthumous)

(Effective date of the award 15 May 1998)

On 15 May 1998, at 1330 hours, Sepoy S Alphonse was member of a patrol tasked to apprehend militants in Simalguri village in Assam. On approaching the village, the patrol was engaged by heavy automatic fire. The patrol closed in killing three militants.

Some militants were then noticed running. Sepoy S Alphonse led the chase despite frontal fire. As the patrol reached village Nalbari, it encountered heavy automatic fire and grenade attacks from militants hidden in a marshy area with chest high elephant grass. The patrol was deployed and the ensuing fire fight lasted for over two hours.

Appreciating that militants would escape in the approaching darkness Sepoy S Alphonse crawled towards one of the militants from the East, inviting fire and grenade attacks. Totally unmindful of his personal safety, Sepoy S Alphonse made a charge on one militant and shot him dead. Noticing that a second militant was preparing to throw a grenade at

his party Sepoy S Alphonse stood up and charged at him. This distracted the militant's attention who threw the grenade at Sepoy S Alphonse. Sepoy S Alphonse though fatally wounded. shot at the militant, injuring him. The brave soldier succumbed to his injuries on 15 May 98.

The operation resulted in killing of five militants and recovery of Rifles, along with a large quantity of ammunition and equipment.

Sepoy S Alphonse thus. displayed cold courage, dogged determination and utter disregard for personal safety in saving the life of his comrade and made the supreme sacrifice.

14. Major Neeraj Sood (IC-53228) 6 Kumaon

(Effective date of award 18 May 1998)

On the night of 17 May 98, Major Neeraj Sood led an ambush party. He sited the ambush on the approaches to the villages Purani Bhergaon in Assam in two outhouses with great tactical acumen.

At about 0730 hours, on 18 May 98, the Look Out man informed Major Neeraj Sood that four armed militants were approaching the site. Ambush party allowed them to enter the killing area and sprung into action. One militant was killed on the spot but the other three militants took firing positions and opened heavy automatic fire and threw grenades.

Undeterred by the intense engagement, Major Neeraj Sood personally led his small group in the open to engage the fleeing militants. As he was trying to manoeuvre his group, one of the militant ran across, directly fired at Major Neeraj Sood and jumped into a nearby pond to escape. Major Neeraj Sood asked his group to take cover and rushed alone with utter disregard to his personal safety and killed the militant.

Major Neeraj Sood, thus, made painstaking efforts to build a reliable intelligence network, outstanding tactical acumen and a very high standard of demonstrative and inspiring leadership exhibited in the face of heavy fire.

15. Captain Sukhvinder Singh Dhaliwal (IC-53530) 5/5 Gorkha Rifles (Frontier Force)

(Effective date of award 22 May 1998)

On 22 May 1998, Captain Sukhvinder Singh Dhaliwal, was Commander of a team during a raid on a hideout of insurgents on banks of Khordak River in Bishenpur District in Manipur.

At 0010 hours after reaching the debussing point the officer led his teams cross-country through marsh ridden route of 5 kilometres to the target. On nearing the target he deployed 51 mm Mortar detachment for fire support and sent one team to a flank for fire support cum cut off.

Just 30 metres from the hideout Captain Sukhvinder Singh Dhaliwal's team came under heavy grenade launcher fire. Realising any delay would result in escape of insurgents, the officer gave a war cry "Ayo Gorkhali" and led assault on to the hideout. Three armed insurgents in verandah opposed him. The officer personally shot at and killed two insurgents. The officer then entered the hideout As he approached, one insurgent leapt out with rifle AK-56 in hand. Captain Sukhwinder Singh Dhaliwal remained claim and with nerves of steel shot dead the insurgent at close quarters.

Subsequent search led to recovery of a large number of arms, ammunition and incriminating documents. The raid led to destruction of a major hideout of insurgents.

Captain Sukhwinder Singh Dhaliwal displayed resolute leadreship, courage and breavery of a very high order.

16. 5452901 Rifleman Amar Bahadur Gurung, 5/5 Gorkha Rifles (FF)

(Effective date of the award 22 May 1998)

On 22 May 1998 Rifleman Amar Bahadur Gurung was buddy of an officer during a raid on a hideout of insurgents on the banks of Khordak River in Bishenpur District, Manipur.

After negotiating through marsh ridden route of 5 kilometers the team reached the target. Just 30 meters from the hideout it came under heavy small arms automatic and grenade launcher fire. After a few minutes there was sudden lull in the insurgent's fire.

Rifleman Amar Bahadur Gurung alongwith his buddy giving a war cry "Ayo Gorkhali", physically assaulted the hideout. Three armed insurgents in the verandah opposed the assault.

On entering the compound of the hideout, the officer shot dead two insurgents. Rifleman Amar Bahadur Gurung, finding his rifle magazine empty, swiftly drew his khukri and with utter disregard to his personal safety physically assaulted one of the armed insurgents and killed him. He then changed his magazine and entered the hideout with the officer.

Rifleman Amar Bahadur Gurung, thus, displayed gallantry in the face of heavy odds and direct insurgents's fire.

17. 3385328 Havildar Gurmit Singh, 2 Sikh

(Effective date of the award 25 May 1998)

On 25 May 98 on specific information a seek and destroy mission of which Havildar Gurmit Singh was a part, was executed in village Jhalas of Rajouri district in Jammu and Kashmir.

In a swift and lightening move the cordon was established. On being challenged the militants opened heavy fire from inside a house. While own troops kept the militants engaged, Havildar Gurmit Singh unmindful of the fling bullets crawled upto the target house and finding a window, let loose a burst of AK-47. The militants panicked and tried to escape.

Anticipating their move, Havildar Gurmit Singh with a comrade quickly prepositioned and as the Anti National Elements emerged, without caring for his life Havildar Gurmit Singh spitting fire charged onto the astonished Anti National Elements. A fierce close quarter battle ensured in which Havildar Gurmit Singh single handedly killed both the militants. Two rifles AK-56, a radio set and large quantity of ammunition were recovered.

Havildar Gurmit Singh, thus, displayed gallantry of an exceptional order in the face of the militant fire with utter disregard to personel safety.

18. 124204 Rifleman Ashok Kumar Jena,
12, Assam Rifles.

(Effective date of the award 11 June, 1998)

On 11 June 1998 Rifleman Ashok Kumar Jena participated in a joint operation in the insurgency ridden area of Imphal valley in Manipur.

Rifleman Ashok Kuma Jena formed part of the coloumn which was diverted to intercept the move of hostiles in a Gypsy. Despite three days of continuous operations, Rifleman Ashok Kumar Jena navigated the move of his column over a difficult terrain negotiating high features with resoluteness and skill.

On arrival at the site Rifleman Ashok Kumar Jena formed part of reserve party of the ambush. At about 1900 hours a speeding Gypsy got stuck in the slush amidst the ambush site and its occupants jumped of and opened fire.

Unfazed by the heavy firing, Rifleman Ashok Kumar Jena ferociously charged at the fleeing insurgents and knocked them off from close quarters. The spectacular operation resulted in the killing of seven hardcore insurgents besides recovery of arms and ammunition.

Rifleman Ashok Kumar Jena, thus, displayed exceptional acts of bravery beyond the call of duty and aggressive spirit in the face of heavy hostile fire regardless of the great peril to his life.

19. Assistant Commandant Vazir Singh,
(AR-196),
12, Assam Rifles.

(Effective date of the award 13 June, 1998)

Assistant Commandant Vazir Singh is the Company Commander of a unit which is actively engaged in combating insurgency in the very sensitive area of Imphal in Manipur. A robust, highly motivated officer, he has consistently displayed outstanding combat leadership in several encounters with hostiles, always emerging victorious without a single casualty to own troops.

On 13 Jun 1998 after 72 hours of combing operations in the hazardous mountains, electronic intercept revealed the move of hostiles on the road PUKHAO - SAGOLMANG in Imphal. Assistant Commandant Vazir Singh tactfully laid an ambush. Early Warning System and leading from the front inspired his men to remain steadfast.

A gypsy rushed and tried to turn amidst the ambush site while its occupants jumped off and opened fire. A heavy exchange of fire ensued and the hostiles tried to flee but were put in checkmate. Regardless of the great peril to his life Assistant Commandant Vazir Singh boldly charged with a lethal brush of fire delivering the coup de gracy to the hostiles. As a result total of seven militants were killed and a large quantity of arms/ammunition and equipment recovered in the operation.

Assistant Commandant Vazir Singh, thus, displayed exceptional acts of bravery beyond the call of duty and outstanding leadership in the face of heavy hostile fire.

20. 9422500 Paratropper Lal Bahadur Tamang,
9, Para (Special Forces).

(Effective date of the award 16 June 1998)

On 14—17 June 1998 Paratrooper Lal Bahadur Tamang was the leading scout of A five men squad during operations conducted in Haphrude forests in Jammu and Kashmir. The squad was tasked on a 72 hours search and destroy mission in this area.

After two days in the jungle on 16 June 1998, Paratrooper Lal Bahadur Tamang picked up a trail and over the next three hours carefully followed the militant tracks. At around 1400 hours he led the squad to within 60 metres of a militant hideout in the jungle. Leaving the squad under cover to give him covering fire., he stealthily moved forward to conduct close surveillance. For the next two hours, he alongwith an officer kept observing two armed militants preparing a hide.

At around 1600 hours, when the militants were preparing to move out, he quietly closed to within 8 metres of the militants. When the officer tossed in the grenades, two militants came charging out, firing. Paratrooper Lal Bahadur Tamang spontaneously charged at the militants, with his Khukri, and in a swift physical assault beheaded both of them.

Paratrooper Lal Bahadur Tamang, thus, displayed raw courage, battlecraft skills and rare comraderie while fighting the militants.

21. Major Rohit Sharma (IC-46716)
8, Jammu & Kashmir Light Infantry
(Posthumous)

(Effective date of the award 17 June, 1998)

On 17 June 1998 an encounter with the militants took place at Tirchal, District Poonch in Jammu and Kashmir as a surprise raid operation.

Around 1300 hours presence of three harcore militants in the village was revealed by own source. A column was tasked to launch the operation Major Rohit Sharma volunteered to lead and launched an operation to flush out the militants from suspected DHOKS.

Soon the place was engulfed by heavy exchange of fire including use of grenades by the militants. Rear side of the house overlooking a thickly vegetated Nallah remained a possible escape route. Sensing this, Major Rohit Sharma regardless of his own safety crawled close to the house, smashed a window and fired at the militants killing one. His second burst of fire coincided with the one from the second militant. Though the militant was killed, the gallant officer was also fatally wounded and died on the spot. A grenade lobbed by the officer while falling set the house on fire which forced the third militant out of the house where he was killed.

Major Rohit Sharma, thus, displayed keen tectical acumen courage and bravery of highest order.

22. Major Syed Sibatul Hassan Rizvi,
(IC-51124), 3 Kumaon.

(Effective date of the award 21 June, 1998)

Hailing from the Jammu and Kashmir valley proper, Major Syed Sibatul Hassan Rizvi has been disregarding constant threat from militants to the lives of his family members and himself he was responsible for a chain of successful operations.

Operating under a pseudonym, Major Syed Sibatul Hassan Rizvi established an effective intelligence network and penetrated the formidable and otherwise impregnable security wall around militants. He was specifically responsible for actionable intelligence for two major operations wherein ten most wanted militants were eliminated.

On 07 August 1997, the officer suffered severe gunshot injuries from the militant guns. Hospitalised and immobiliged for a while, Major Syed Sibatul Hassan Rizvi bounced back combating militancy with renewed vigour and resolve. Once again on 25 January 97 the officer tracked down four militants responsible for the infamous Wandhama killings.

On 21 June 1998 Major Syed Sibatul Hassan Rizvi led troops at Seikhpura Moballa in District Srinagar. Fully prepared to maket the supreme sacrifice, the officer closed in in the the face of effective Anti National Elements fire on his men. He sustained severe gunshot wounds on left shoulder. Profusely bleeding, disregarding the tearing pain, he charegd on resolutely and in a memorable close combat killed the militant single handedly. Unwilling to leave his men still engaed in action, the officer was forcibly evacuated to the hospital.

Major Syed Sibatul Hassan Rizvi, thus, displayed gallantry and unflinching loyalty while fighting the militants.

23. JC-179394 Subedar Shiv Singh,
7 Garhwal Rifles,
(Posthumous).

(Effective date of the award 21 June 1998)

On 21 June 1998 during an operation the platoon search party under Subedar Shiv Singh while searching peripheral houses in village safapura in Jammu and Kashmir, suspected presence of militants in a house. On being detected, belligerent foreign mercenaries opened heavy indiscriminate fire. Subedar Shiv Singh immediately deployed his platoon and cordoned the target house.

Undeterred by the barrage of militant fire, he alongwith his buddy, climbed up the roof of a adjoining house to engaged the militants from a tactically advantageous position. With utter disregard to his personal safety he then jumped on to the roof of target house and sot dead one militant through the falsecciling. The second militant shifted his location and brought intense fire on Subedar Shiv Singh . Subedar Shiv Singh charged to ground floor of house taking the militant by surprise and shot him dead in a close quarter battle. In this gun battle Subedar Shiv Singh sustained gun shot wound in his right eye and succumbed to his injury on 21 June 98.

Subedar Shiv Singh displayed gallantry of a high order, outstanding aggressiveness, resolute determination and exceptional leadership and made the supreme sacrifice of his life.

24. 2479481 Lance Naik Narinder Singh,
22 Rashtriya Rifles,
(Posthumous)

(Effective date of the award 28 June, 1998)

On 28 June 1998 at 0730 hours, an ambush party observed movement of a few militants in Machhal Sector in Kupwara District in Jammu and Kashmir. Immediately the complete area was cordoned. Lance Naik Narinder Singh was part of a search party.

The search party established contact with militans. Lance Naik Narinder Singh was wounded at the first instance. Yet he crawled behind a boulder and engaged a militant, who was hiding behind a tree trunk killing him on the spot The other militants kept firing and hurled grenades on search party injuring three other ranks.

Showing utter disregard to his personal safety Lance Naik Narinder Singh kept firing from his rifle. Although bleeding profusely he managed to job two grenades. Later on another militant was found dead at the site. During the above operation Lance Naik Narinder Singh exhibited conspicuous bravery in the face of militants and laid down his life for the nation on 28 June 1998.

Lance Naik Narinder Singh, thus, displayed valour in the face of militants and made the supreme sacrifice.

25. 4062534 Havildar Jagmohan Singh,
9 Para (Special Force).

(Effective date of the award 26 July, 1998)

On 25-26 July 1998 Havildar Jagmohan Singh was the squad commander of a troop which was conducting a search and destroy mission in general area Bari Bhaik, Surankot district in Jammu and Kashmir.

Havildar Jagmohan Singh's Squad while approaching the target area of Bari Bhaik was fired upon by the militants from inside a dhok. Havildar Jagmohan Singh closed in which the militants under heavy fire and deployed his squad to cut off all escape routes.

The fire fight with the militants was on for about three hours and their fire was becoming more and more effective. Havildar Jagmohan Singh realising that drastic action was required of him to prevent his squad from being decimated, rose to the occasion undaunted by the hail of militant fire. He in an act of conspicuous gallantry charged into the militant dhok lobbying grenades and firing. His act of daredelivery stunned the trapped militants and resulted in the killing of five top ranking militants.

Havildar Jagmohan Singh displayed gallantry and courage with total disregard to his personal safety.

26. Captain Tarun Kumar (IC-54831),
4, Rashtriya Rifles,
(Posthumous).

(Effectivel date of the award 09 August, 1998)

On 09 August 1998, at 1000 hours, a cordon and search operation was planned in village Jagarpur, District Kupwara in Jammu and Kashmir. Captain Tarun Kumar was deployed as part of cordon around the cottage. At 2115 hours militants attempted breaking through his cordon.

Displaying exemplary courage the office alongwith his radio operator engaged militants in a fierce firefight at extremely close range. The officer shot down on militant. Simultaneously the office was shot at by another militant from a distance of approximately five meters.

Despite having sustained grave injury the officer charged at the militant firing from hip and killed the militant. The militant before dying threw a grenade at the officer which killed both the officer and his radio operator.

Exceptional courage and undanuted bravery by the officer prevented route of escape to militants, thereby resulting in trapping of all militants. As a result overall twelve militants were killed including the two killed by the officer.

Captain Tarun Kumar displayed exemplary courage and gallantry beyond the call of duty and made the supreme sacrifice.

27. GS-171481W, Mechanical Transport Driver
Jabar Singh,
(Posthumous).

(Effective date of the award 10 August 1998)

Mechanical Transport Driver Jabar Singh of 591 Independent) Platoon Project Himank was deployed with 55 Road Construction Company (P) Himank for conveyance of stores, personnel etc. in Kargil sector (J&K).

On 10 August 1998, MT Driver Jabar Singh was detailed for collection of rations from the Field Supply Depot, KARGIL. He reached his unit location at around 1500 hrs, when the area was subjected to heavy artillery shelling from across the Line of Control. Having first taken shelter in a nearby bunker, and realising his vehicle was out in the open, MT Driver Jabar Singh rushed out to park it at a safer place, with utter disregard to his personal safety. While returning to the safety of his bunker he saw Pioneer Chunnu Tudu lying on the ground and bleeding profusely from injuries sustained by the shell splinter. Displaying exemplary courage, MT Driver Jabar Singh rushed to the aid of the injured Pioneer. While carrying him to a place of safety, MT Driver Jabar Singh was also hit by a shell splinter. This did not deter him from continuing to drag Pioneer Chunnu Tudu to safety, till he himself fell unconscious as a result of his wounds. MT Driver Jabar Singh was exacuated to 92 Base Military Hospital, where he succumbed to his injuries at 1515 hrs on 13 Aug 98.

Mechanical Transport Driver Jabar Singh despite heavy artillery shelling, displayed exceptional courage and bravery while laying down his life in a bid to save that of his fellow companion.

28. G 173254P Pioneer Chunnu Tudu,
(Posthumous).

(Effective date of the award 10 August 1998)

GS 173254P Pioneer Chunnu Tudu of 326 Surfacing Platoon (GREF) Project Himank, was detailed as sentry at HQ 55 Road Construction Coy (GREF) at Kargil in Jammu and Kashmir.

On 10 August 98 at about 1500 hrs, firing by Pakistani troops was directed towards the unit Camp. All personnel ran for safety and went inside the bunkers. After about an hour or so when the shelling stopped, all personnel including Pioneer Chunnu Tudu were coming out of the bunkers to resume their duties.

Suddenly, the shelling was resumed from across the Line of Control. When Pioneer Chunnu Tudu was barely 50 meters away from the bunker, he had a glimpse of a shell coming in the direction of their bunkers. Sensing the danger, Pioneer Chunnu Tudu raised an alarm and asked all personnel, who were coming out of the bunkers, to get back inside their bunkers. In utter disregard to his own safety, he was above the convey his message ot most of the personnel to move back to safety. However in the meantime another sheel fell close to him thereby killing him on the spot. It was due to his presence of mind and quick response that large numer of causalties were averted.

Pioneer Chunnu Tudu, thus, displayed highest order of devotion to duty, with utter disregard to his personal safety.

29. 750020046 Assistant Commandant
Ashok Kumar Rana,
19 ITBP.
(Posthumous).

(Effective date of the award 02 November, 1998)

On specific information, Assistant Commandant Ashok Kumar Rana laid a cordon around village Chirwar, District

Anantnag in Jammu and Kashmir in the early morning on 02 November 1998 alongwith other parties of the Indo Tibetan Border Police

All villagers were cautioned and requested to come out of their houses, so that they could be kept at a safe place. Six foreign militants came out from a house and started indiscriminate fire. Assistant Commandant Ashok Kumar Rana after ensuring the safety of the villagers launched a counter attack against the firing militants leading his party from the front and gunned down two hard core foreign mercenaries.

When the officer aimed to kill the other militants, his weapon misfired and taking advantage of this situation, militants opened a volley of fire. Despite a burst of four rounds having mortally wounded him, he exhorted and directed his troops to take covering position and fire at the militants.

As a result of his unrelenting attitude and judicious directions to his troops, five hard core militants were killed and a huge quantity of arms, ammunitions, wireless sets, training precis and other intelligence value materials were recovered.

Assistant Commandant Ashok Kumar Rana, thus, displayed firm determination and bravery in the face of intense fire with utter disregard to his personal safety and made the supreme sacrifice.

BARUN MITRA, Dy Secy. to the President

MINISTRY OF COMMUNICATIONS

(DEPARTMENT OF TELECOMMUNICATION)

New Delhi-110001, the 15th March 1999

RESOLUTION

No. E-11020/1/98-OL.—The Government of India hereby reconstitute the Hindi Salahakar Samiti in the Department of Telecommunications, Ministry of Communications as under :—

Chairman

1. Minister of Communications

Vice-Chairman

2. State Minister of Communications

Non-Official Members nominated by the Ministry of Parliamentary Affairs

From Lok Sabha

Members

3. Smt. Usha Meena

4. Shri K. Palani Swami

From Rajya Sabha

5. Shri Dina Nath Mishra

6. Dr. B. B. Dutta

Non-Official Members nominated by the Committee of Parliament of Official Language

7. Shri Rajo Singh

8. Dr. S. Venugopalacharya

Representative from Kendriya Sachivalaya Hindi Parishad

9. Shri Hari Babu Kansal,
E-9/22, Vasant Vihar,
New Delhi-110057.

Rashtrabhasha Prachar Samiti

10. Prof. Anant Ram Tripathi,
Prime Minister
Rashtrabhasha Prachar Samiti,
P.O. Hindi Nagar,
Vardha-442003 (Maharashtra).

Non-Official Members nominated by the Department of Official Language

11. Dr. R. Surendran
Saket - Chelembra-673634,
Kerala.

12. Dr. Virendra Dubey,
1595, Napiear Town,
Jabalpur-482 001.

13. Dr. Siyaram Tiwari,
Hindi Bhavan, Shanti Niketan,
West Bengal-731 235.

Other Non-Official Members nominated by Department of Telecommunications

14. Shri Krishna Kumar Grover,
F.B.-16, Tagore Garden,
New Delhi-110027.

15. Prof. Vachaspati Upadhyay,
Vice Chancellor, Shri Lal Bahadur
Shastri Rashtriya Sanskrit
Vidyapeeth
New Delhi-110016.

16. Shri Tarun Vijay,
Editor, Panchjanya,
New Delhi.

17. Prof. (Ms.) Charu Mittal,
A-115, Shanti Niketan,
New Delhi-110021.

Officers

Department of Official Language

18. Secretary

19 Joint Secretary

Department of Telecommunications

Members

20. Secretary

21. Additional Secretary

22. Member (Services)

23. Member (Production)

24. Member (Finance)

25. Member (Tech.)

26. Joint Secretary

27. Chairman & Managnig Director,
Hindustan Teleprinters Ltd.
Madras.

28. Chairman & Managing Director,
Indian Telephone Industries,
Bangalore.

29. Chairman & Managing Director,
Videsh Sanchar Nigam Ltd.,
Bombay.

30. Chairman & Managing Director,
Telecommunication Consultants India
Ltd. New Delhi.

31. Chairman & Managing Director,
Mahanagar Telephones Nigam Ltd.,
New Delhi.

32. Executive Director,
C-DOT, New Delhi.

33. Director,
Monitoring Organisation,
Pushpa Bhavan,
New Delhi.

Member-Secretary

34. Director (OL)

2. FUNCTION

Function of the Samiti will be to render advice to the Government in regard to the implementation of the provisions relating to Official Language contained in the constitution Official Language Act and rules and policy decisions of the Kendriya Hindi Samiti and instructions issued by the Department of Official Language and also in regard to the progressive use of Hindi in the Department of Telecommunications.

3. TENURE

The tenure of the Samiti will be three years from the date of its composition provided that—

(a) A member, who is a member of Parliament, will cease to be a member of the Samiti as soon as he ceases to be a Member of Parliament,

(b) Ex-officio members of the Samiti shall continue as members so long as they hold the office by virtue of which they are members of the Samiti, and

(c) A member nominated in a vacancy arising in the Samiti due to the death or resignation of any member, shall hold office for the residual term.

4. TRAVELLING AND OTHER ALLOWANCES

The non-official members will be paid travelling and daily allowances for attending the meeting of the Samiti at the rates fixed by the Government of India, from time to time vide O.M. No. 11/20034/4/86-O.L. (A-2) dated 22nd January 1987 issued by the Department of Official Language.

ORDER

Ordered that a copy of this Resolution be published in the Gazette of India for general information.

GURDEEP SINGH, Jt. Secy.

MINISTRY OF RAILWAYS

(Railway Board)

New Delhi, the 10th March 1999

RESOLUTION

No. Hindi/Samiti/98/38/17.—The Government of India (Ministry of Railways) have decided to constitute sub-committee of Railway Hindi Salahkar Samiti, constituted under Ministry of Railway's Resolution No. Hindi/Samiti/98/38/1 dated 26-10-98. This sub-committee will mainly suggest the high quality literature at Railway Book stalls. The composition and functions of the sub-committee will be as follows :—

1. Composition

Members

1. Smt. Mrinal Pandey,
B-249, Malwa Singh Block,
Asian Games Village,
New Delhi-110016.
Phone : 6493167.

2. Shri Rahul Dev.
Devasis, 44-A, F-13,
Mukherjee Nagar,
New Delhi-110018.
Phone : 5190171.

3. Shri Vikas Kumar Jha,
106, Adharshila Complex,
Gandhi Maidan,
Patna-800001.
Phone : 0621/6664338.

4. Shri Alok Mehta,
A-16, Nav Bharat Times Apartment,
Mayur Vihar, Phase-1,
Delhi-110092.
Phone : 3317482.

Official-Member

5. Executive Director,
Passenger Marketing,
Railway Board,
New Delhi.

Convenor

6. Director,
Official Language,
Railway Board,
New Delhi.

2. Meetings of the sub-committee will be called as and when necessary.

3. TENURE

The tenure of the sub-committee will be upto 25-10-2001 i.e. upto the term of the present Railway Hindi Salahkar Samiti.

4. T.A./D.A.

The T.A./D.A. to non-official members of the sub-committee for attending meetings will be regulated in terms of the orders as applicable to the non-official members of Railway Hindi Salahkar Samiti.

5. FUNCTIONS

Following will be the main functions of the sub-committee :—

5.1 It will suggest the quality literature at the Railway Stalls.

5.2 It will consider the measures for utilisation of railway platforms to promote art, culture and literature.

5.3 It will provide necessary guidance to make railway magazines more interesting and attractive.

6. HEADQUARTER

The Headquarter of sub-committee will be in Rail Bhawan, New Delhi. But its meetings can be called out of Delhi as and when required.

ORDER

ORDERED that a copy of this resolution be communicated to the Prime Minister's Secretariat, Cabinet Secretariat, Department of Parliamentary Affairs, Lok Sabha Secretariat and Rajya Sabha Secretariat and all the Ministries/Departments of Government of India.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

D. P. TRIPATHI, Secy.
Railway Board and
Ex-officio Additional Secretary

प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 1999
Printed by the Manager, Govt. of India Press, Faridabad and Published by the Controller of Publications, Delhi, 1999.